

चमत्कारी तावीज़



सर वाल्टर स्कॉट के प्रसिद्ध उपन्यास 'तलिस्मान' का सरल रूपान्तर

चमत्कारी तावीज़



सर वाल्टर स्कॉट के प्रसिद्ध उपन्यास
'तलिसमान'
का सरल हिन्दी रूपान्तर

ISBN : 9788174830111

संस्करण : 2018 © शिक्षा भारती

CHAMATKARI TAWIZ (Novel) by Sir Walter Scott

(Abridged Hindi edition of *Talisman*)

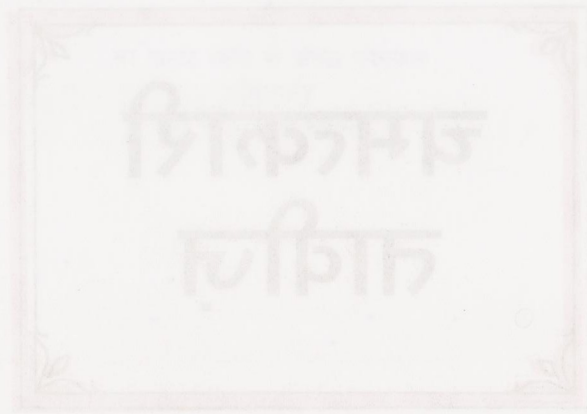
मुद्रक : जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली

शिक्षा भारती

1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

चमत्कारी तावीज़





चमत्कारी तावीज़

बहुत दिन पहले की बात है, ईसाइयों के तीर्थ-स्थान जेरूसलम पर मुसलमानों ने अधिकार कर लिया था। विधर्मियों के हाथ से अपने तीर्थ-स्थान को छुड़ाने के लिए यूरोप के ईसाइयों ने हथियार उठा लिए। यूरोप के एक-एक गांव से क्रास के चिह्न वाले झंडे लेकर ईसाई जेरूसलम पहुंचने लगे। इन लोगों को 'क्रूसेडर' कहा जाता था। ऐसे ही एक योद्धा थे सर केनेथ।

केनेथ का घर इंग्लैंड के स्काटलैंड प्रदेश में एक पहाड़ी इलाके में था। वह उस इलाके का सरदार था। उस प्रदेश में प्रायः ठंडक बनी रहती थी और मौसम बड़ा सुहावना रहता था। अपने उस सुन्दर देश को छोड़कर केनेथ को सीरिया के इस रेगिस्तान में ईसाई सेनाओं के साथ धर्मयुद्ध में भाग लेने के लिए आना पड़ा था।

केनेथ रणभूमि के किनारे-किनारे अपने घोड़े पर सवार चला जा रहा था। धूप इतनी तेज़ थी कि रणभूमि की बालू अंगारों की तरह तप रही थी। केनेथ ने सिर पर लोहे का टोप पहन रखा था। उसका शरीर ज़िरह-बख़्तर से पूरी तरह लैस था। वह एक

हाथ में फौलाद की मजबूत ढाल और दूसरे में लम्बा भाला लिए हुए था। उसकी कमर में दुधारी तलवार बंधी हुई थी। उसका घोड़ा भी फौलादी बख्तर से ढका था। केनेथ इंग्लैंड का एक बड़ा ज़मींदार था और अपने कबीले का नेता था।

केनेथ नार्मन जाति का योद्धा था, जो बड़ी लड़ाकू और बहादुर जाति थी। केनेथ जितना युद्ध-कुशल और वीर था, उतना ही दिल का सच्चा और उदार प्रकृति का आदमी था। दूसरे लोग फौजों को लेकर रास्ते के गांवों और नगरों को लूटते चलते थे। लेकिन केनेथ कभी इस तरह का काम नहीं करता था।

इस समय उसके पास करीब साठ सैनिक थे। वह लूटपाट नहीं करता था, इसलिए उसके साथ के सिपाही उससे खुश नहीं रहते थे। धीरे-धीरे उसके पैसे भी खत्म हो गए। इसलिए उसके सैनिक उसका साथ छोड़कर दूसरे नायक की टुकड़ी में भर्ती हो गए। सिर्फ एक वफादार नौकर उसके साथ था, लेकिन वह भी रास्ते में बीमार पड़ गया। इसलिए उसे सराय में छोड़कर केनेथ अकेले चल पड़ा।

लेकिन बिना किसी अंगरक्षक को साथ लिए, अकेले निकलना किसी सरदार को शोभा नहीं देता था। यह उसके लिए अपमानजनक बात थी। इसके अलावा शत्रुओं के इलाके में अकेले घूमना खतरे से खाली नहीं था।

केनेथ अपना घोड़ा दौड़ाते हुए आगे बढ़ा जा रहा था। दो-चार खजूर के पेड़ों के अलावा दूर तक हरियाली का कहीं नाम नहीं था। ये खजूर के पेड़ भी जगह-जगह झुंड बनाकर उगे हुए थे। केनेथ जल्दी अपने मुकाम पर पहुंचना चाहता था।

अचानक एक जगह खजूर के चार-पांच पेड़ों के झुंड में उसे

कुछ आहट-सी सुनाई दी। वह कुछ संभले, इसके पहले ही झाड़ी में से एक घुड़सवार बाहर निकल आया और उसकी ओर लपका। वेशभूषा से वह एक अरब सैनिक मालूम होता था। इसमें कोई संदेह ही नहीं कि वह दुश्मन का सिपाही था और केनेथ पर हमला करना चाहता था।

केनेथ अब तक कई लड़ाइयों में भाग ले चुका था और सैकड़ों बार मौत के मुंह में जाते-जाते बचा था। इसलिए इस अचानक हमले से वह घबराया नहीं। अरब सैनिक तेज़ी से घोड़ा दौड़ाते हुए उसकी ओर बढ़ रहा था। लेकिन केनेथ ने अपने घोड़े की चाल धीमी कर दी और फिर एक जगह रुककर खड़ा हो गया। अरब सैनिक भी हाथ में ढाल-तलवार लिए था और पीठ पर तरकश बांधे था। केनेथ के रुक जाने पर वह उस पर हमले के मौके की तलाश में उसके इर्द-गिर्द घूमने लगा।

केनेथ भी अपनी जगह खड़ा-खड़ा उसकी हर हरकत को चौकन्ना होकर देख रहा था। कुछ देर इसी तरह चक्कर लगाने के बाद वह पहले तो दूर हट गया और फिर बिजली की तेज़ी से केनेथ की ओर लपका। लेकिन इस बार भी केनेथ एक जगह ही खड़ा होकर उसके वारों से बचता रहा। फिर अचानक केनेथ ने मौका पाकर अपना भाला दुश्मन की ओर फेंक दिया।

वह अरब योद्धा भी बहुत तेज़ मालूम होता था। उसने भाले को अपनी ढाल पर झेल लिया। लेकिन ऐसा करते समय वह उसके धक्के को न संभाल सका और ज़मीन पर आ गिरा। वह भी ज़िरह-बख्तर से पूरी तरह लैस था। उससे लड़ने के लिए केनेथ को भी घोड़े से नीचे उतरना पड़ा। लेकिन केनेथ को नीचे उतरते देखकर वह फौरन लपककर घोड़े पर सवार हो गया और वहां से

भाग निकला।

भागकर वह दूर नहीं गया। वह फिर से लौटा और इस बार केनेथ पर तीर बरसाने लगा। तीर आते थे और केनेथ के वस्त्र से टकराकर रह जाते थे। लेकिन सातवां तीर ऐसी जगह लगा जहाँ से वस्त्र कुछ ढीला हो गया था। तीर के लगते ही केनेथ घोड़े से नीचे आ गिरा।

पहले तो अरब सैनिक उसे संदेह से देखता रहा और फिर



घोड़े से उतरकर धीरे-धीरे उसके पास आया। जैसे ही वह पास आया, केनेथ बिजली की तेज़ी से उछलकर खड़ा हो गया और पलक मारते ही उसने अरब सैनिक पर हमला कर दिया। दोनों एक-दूसरे से गुंथ गए। केनेथ उससे ज़्यादा ताकतवर था। लेकिन वह केनेथ से ज़्यादा चालाक और चौकन्ना था। केनेथ उसको पकड़कर गिराना चाहता था, लेकिन हर बार वह बच जाता था।

अन्त में केनेथ ने उसकी कमर में बंधा हुआ पट्टा पकड़ लिया। लेकिन थोड़ी ही कोशिश के बाद अरब सैनिक उसकी पकड़ से आज़ाद हो गया। केनेथ यह देखकर हैरान रह गया कि उसकी पेटी उसके हाथ में रह गई और अरब सैनिक उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया। दूसरे ही क्षण वह घोड़ा दौड़ाता हुआ वहाँ से दूर हट गया। केनेथ अपनी मूर्खता पर हंस पड़ा। उस पेटी में एक छुरा और एक खंजर बंधा हुआ था। कुछ ही क्षणों में अरब सैनिक फिर से लौट पड़ा।

वह लौटकर केनेथ से अपनी पेटी मांगने लगा। दोनों हाथ पर उठाए हुए और लड़ाई बन्द करने का इशारा करते हुए वह बोला, “इस वक्त तो अरबों और ईसाइयों के बीच लड़ाई रुकी हुई है। फिर भला हम लोग ही आपस में क्यों लड़ें? आओ, सुलह कर लें।”

केनेथ बोला, “सुलह करने से मुझे इनकार नहीं है लेकिन अगर बाद में तुमने धोखा दिया तो?”

“नहीं, मुसलमान धोखे से वार नहीं करता। फिर तुम तो एक सच्चे बहादुर हो। मुझे यकीन है कि तुम भी धोखा नहीं दोगे!”

“ठीक है, हमारी सुलह हुई!” यह कहकर केनेथ ने उससे हाथ मिलाया। दोनों साथ-साथ चलने लगे। कुछ दूर आगे चलकर

एक झरने के पास दोनों खाना खाने बैठे। खाते समय केनेथ ने बताया कि वह जेरूसलम की ओर जा रहा है और उसके पास नगर में प्रवेश करने के लिए एक परवाना भी है, जिसपर सुल्तान की मुहर लगी है। उसने अपनी जेब से एक कागज़ निकालकर अरब को दिखा दिया और कहा, “मुझे जेरूसलम में ऐनगाज़ी के पादरी थियोडोरिक के पास जाना है।”

परवाने को देखकर अरब बोला, “अच्छा, इस पर सुल्तान की मुहर भी लगी है ! मैं भी कैसा मूर्ख हूँ कि तुमसे लड़ाई कर बैठा ! तुम मुझे पहले ही बता देते ! अच्छा, अभी तुम कह रहे थे कि तुम्हें ऐनगाज़ी के पादरी थियोडोरिक के पास जाना है, लेकिन उनके पास तक पहुंचने का रास्ता बड़ा बीहड़ है। बिना किसी को साथ लिए तुम वहां तक पहुंच नहीं सकोगे। चलो, मैं ही तुम्हें वहां तक पहुंचा दूँ।”

केनेथ बोला, “इससे बढ़कर खुशी की बात भला मेरे लिए और क्या होगी, रास्ता जल्दी कट जाएगा। लेकिन कहीं इससे पादरी किसी आफत में न फंस जाए। क्योंकि ईसाई पादरियों से तुम लोग अभी भी अच्छा बर्ताव नहीं करते। अगर ऐसा न होता तो आज सैकड़ों मील दूर यहां आकर ईसाई सेनाओं को लड़ाई लड़ने की क्या ज़रूरत थी ?”

वह अरब कुछ गम्भीर होकर बोला, “नहीं, तुमने गलत सुना है। हम तो इन अधर्मी यहूदियों को मार रहे हैं। जब खलीफा अबूबकर ने इजिद-वीन-सोफिया को जेरूसलम जीतने के लिए भेजा था तब उसे हुक्म दिया कि तुम बहादुरों की तरह लड़ाई लड़ोगे और बूढ़े, बीमार या स्त्री-बच्चों को नहीं मारोगे। लोगों के खेत-खलिहान बरबाद नहीं करोगे। उन्होंने फकीरों और पादरियों

पर भी रहम करने को कहा था। लेकिन घुटी हुई खोपड़ीवाले यहूदियों को हम आसानी से नहीं छोड़ते !”

“खैर, इस तरह बैठे-बैठे हम लोग बहस करते रहेंगे तब तो बहुत देर हो जाएगी। चलो, चलते-चलते बात करेंगे।” केनेथ बोला। दोनों अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर आगे बढ़े।

उस समय शाम हो गई थी और सूरज की किरणें मंद पड़ गई थीं। दोनों योद्धा अपने घोड़ों को दौड़ाते हुए आगे बढ़े जा रहे थे।

जब वे लोग अपनी मंजिल के काफी करीब पहुंच गए, तब उस अरब सैनिक ने अपनी चाल कुछ धीमी कर दी और कहा, “तुमने अपना नाम नहीं बताया। जिसके साथ मैंने लड़ाई लड़ी, फिर बैठकर नाश्ता किया और अब अकेले जिसके साथ मैं यात्रा कर रहा हूँ, ऐसे आदमी का नाम तो मुझे जानना ही चाहिए। तुम्हारी बहादुरी को देखकर इतना तो अन्दाज़ा लगाया ही जा सकता है कि तुम कोई साधारण आदमी नहीं हो। तुम्हारा नाम ज़रूर दूर-दूर तक फैला होगा।”

केनेथ बोला, “मेरा नाम केनेथ है, सर केनेथ। मैं एक सरदार हूँ। तुम्हारा नाम क्या है ?

अरब सैनिक बोला, “लोग मुझे सिरकफ के नाम से जानते हैं। मैं कुर्दिस्तान का रहनेवाला हूँ और वहां के सबसे बड़े वंश सेलजुक का मैं भी एक खानदानी हूँ। हमारे सुल्तान भी इसी वंश के हैं। हालांकि मिस्र और सीरिया के सुल्तान सालादीन के सामने मेरी कोई हैसियत नहीं, लेकिन मेरे अपने देश में मेरा नाम भी कम मशहूर नहीं है। अच्छा, यह तो बताओ कि इस धर्मयुद्ध में तुम कितने सिपाहियों के साथ आए हो ?”

सर केनेथ ने उसे सारा किस्सा कह सुनाया। उसने बताया कि किस तरह वह साठ बहादुरों की एक पूरी पलटन के साथ यहां आया था और किस तरह पैसे कम पड़ जाने पर उसके सभी सैनिक दूसरे सरदारों के साथ हो गए और उसका अपना एक वफादार नौकर वीमार होकर एक सराय में पड़ा है।

अरब सैनिक ने कुछ मजाक के स्वर में कहा, “सिर्फ साठ सिपाहियों को लेकर तुम युद्ध लड़ने आए हो ! मेरे पास तुम ये पांच तीर देख रहे हो ! अगर इनमें से एक तीर मैं अपनी छावनी की ओर फेंकूं तो पलक मारते ही एक हजार सिपाही मेरी मदद के लिए यहां आ पहुंचेंगे। पांच तीरों का मतलब हुआ पांच हजार हथियारबंद सिपाही ! और अगर अपना यह धनुष मैं छावनी में भिजवा दूं तो पांच हजार की जगह दस हजार सैनिक मेरी मदद के लिए आ पहुंचेंगे। फिर भी मैं एक मामूली सरदार हूं। मेरे जैसे कितने सरदार इस देश में पड़े हैं। और तुम सिर्फ पचास-साठ सैनिक लेकर इस देश को जीतने आए हो !” यह कहकर वह खिलखिलाकर हंस पड़ा।

केनेथ ज़रा गर्व से बोला, “सिपाहियों की गिनती से लड़ाई में कुछ नहीं होता। हमारा एक-एक ईसाई सैनिक तुम्हारे सौ अरब सैनिकों के बराबर है।”

इस तरह बातें करते-करते वे लोग रेगिस्तानी इलाका पार करके पहाड़ी प्रदेश में आ पहुंचे। आगे से रास्ता बड़ा कठिन था। बहुत उतार-चढ़ाव थे और संकरी पहाड़ी पगडंडियों से आगे होकर बढ़ना पड़ रहा था। रास्ते में अक्सर कई अंधेरी गुफाएं दिखाई दे जाती थीं।

उन गुफाओं को दिखाकर अरब सैनिक ने कहा, “इनमें हिंसक



जंगली जानवर रहते हैं, लेकिन कभी-कभी जानवरों से भी ज्यादा खूंखार आदमी यहां मिलते हैं। ज्यादातर डाकू होते हैं, जिनके लिए मुसलमान और ईसाई का भेद नहीं होता।”

धीरे-धीरे अंधेरा होने लगा था। रास्ते में जानवरों और लुटेरों का डर बढ़ता जा रहा था। थोड़ी ही देर में वे लोग एक पहाड़ी के पास आ पहुंचे। जैसे ही वे लोग उसके पास पहुंचे, एक आदमी पेड़ों के पीछे से निकल आया और उनसे मिलने के लिए नीचे उतरने लगा। सिरकफ बोला, “यही है, तुम्हारा ऐनगाज़ी का पादरी।”

पादरी को देखकर केनेथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। पादरी ने पूरे शरीर को जंगली जानवरों की खाल से ढक रखा था। उसके सिर और दाढ़ी-मूंछ के बाल इतने बड़े-बड़े थे कि उसकी आंखों को छोड़कर चेहरे पर और कुछ भी नहीं दिखाई देता था। लेकिन इतना साफ मालूम हो रहा था कि पादरी बहुत ताकतवर आदमी है।

पादरी ने दोनों को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया। आगे रास्ता बहुत ही संकरा था। बड़ी मुश्किल से सिरकफ और केनेथ आगे बढ़ सके।

जब वे लोग पादरी की गुफा के पास पहुंचे तो पादरी ने केनेथ को एक तरफ ले जाकर पूछा, “तुम किसलिए आए हो, यह तो मैं जानता हूँ। लेकिन पहले यह बताओ कि तुम्हारा गुप्त संकेत क्या है?”

केनेथ ने धीमी आवाज़ में कहा, “मेरा गुप्त संकेत है—राजा लोग आज भिखारी से भीख मांग रहे हैं—कहिए, पहचाना आपने !”

इस संकेत को पादरी फौरन समझ गया। वह उसे अपनी गुफा में ले गया।



2

इधर ईसाई छावनी में लड़ाई की तैयारी हो रही थी। मुसलमानी सेनाओं को भगाती हुई ईसाई सेनाएं एकार और स्कालोन नामक मैदानों में आ पहुंची थीं। लेकिन अब आगे बढ़ना ज़रा मुश्किल हो रहा था। इसका कारण यह था कि पूरी ईसाई सेना का संचालन करने वाला इंग्लैंड का राजा रिचार्ड एकाएक बीमार हो गया था।

इसके अलावा एक कारण और था जो पहले से भी अधिक महत्वपूर्ण था।

जेरूसलम ईसाइयों का पवित्र तीर्थस्थान माना जाता था। इस समय वह मुसलमानों के कब्जे में था। ईसाई इसे सहन नहीं कर सकते थे। उन्होंने तय किया था कि अपने तीर्थस्थान को मुसलमानों से छुड़ाए बिना चैन नहीं लेंगे।

यूरोप में धर्मयुद्ध के नाम पर हज़ारों नौजवान हथियार लेकर अपने तीर्थस्थान की रक्षा के लिए लड़ने को तैयार हो गए। विभिन्न देशों के राजाओं ने अपनी-अपनी सेनाएं दीं और खर्च के लिए अपने खज़ाने खोल दिए। फ्रांस के राजा फिलिप, आस्ट्रिया के ड्यूक लियोपोल्ड, टेम्पलर मठ के पादरियों का प्रधान आदि कई बड़े-बड़े लोग और राजा-महाराजा इस युद्ध में भाग लेने के लिए आ पहुंचे थे। इंग्लैंड के राजा रिचार्ड को उन्होंने अपना सेनापति बनाया था।

राजा रिचार्ड बड़े भारी डील-डौल का और बड़ा ताकतवर

योद्धा था। लोग उसके नाम से थरते थे। लेकिन साथ ही उसमें एक दुर्गुण था। वह बड़ा अहंकारी था। अपने सामने वह किसी को कुछ नहीं मानता था। धर्मयुद्ध में लड़ने के लिए आए राजाओं और सरदारों को वह अपने सामने कुछ नहीं गिनता था।

कुछ दिन तक तो यह सब चलता रहा। लेकिन यूरोप के सभी राजा स्वतन्त्र थे। उन्हें रिचार्ड का व्यवहार ज़रा भी पसन्द नहीं था। खुले आम तो वे उसके खिलाफ कुछ नहीं कर सकते थे, लेकिन उन सबने मिलकर एक षड्यन्त्र रचा। वे रिचार्ड के घमंड को हमेशा के लिए चकनाचूर कर देना चाहते थे।

जब रिचार्ड अचानक बीमार पड़ गया तो दूसरे राजाओं का असन्तोष ज़रा जल्दी ही मालूम हो गया। अभी जेरूसलम पर कब्ज़ा नहीं हो सका था। ईसाई फौजों में असंतोष था। गर्मी के मारे सिपाही परेशान हो उठे थे। यही नहीं, ईसाई छावनी में एक खास किस्म की महामारी फैल गई, जिसे सेना के चिकित्सक तक पहचान नहीं पा रहे थे। सिपाही पटापट मरने लगे। और अब तो खुद राजा रिचार्ड ही बीमार पड़ गया था। इससे ईसाई सेना में और भी अव्यवस्था फैल गई।

लेकिन दूसरे राजाओं में ऐसा कोई नहीं था, जो सेना का नेतृत्व संभाल सके। दुश्मन पर हमला करने की बात तो दूर रही, खुद उन्हें अपनी रक्षा के लिए चिन्ता होने लगी। उन्होंने छावनी के आसपास एक गहरी खाई खुदवाना शुरू किया।

खाई खोदने और छावनी के आसपास एक मज़बूत दीवार खींचने का काम तेज़ी से चल पड़ा। दूसरी तरफ राजाओं ने भीतर ही भीतर आपस में राय करके सुल्तान सालादीन के पास एक सन्देश भेजा और लड़ाई को एक महीने तक रोके रखने की मांग की।

राजा रिचार्ड की बीमारी का समाचार सुल्तान को मिल चुका था। वह अच्छी तरह जानता था कि ईसाई सेना में अब कोई भी आदमी ऐसा नहीं है जो रिचार्ड की जगह ले सके। इसका लाभ उठाकर अगर वह ईसाइयों पर हमला कर देता तो आसानी से उसे जीत मिल सकती थी। लेकिन वह सच्चा बहादुर था, और एक बहादुर के रूप में राजा रिचार्ड का सम्मान करता था। उसके बीमार होने की खबर सुनकर उसे दुःख हुआ और उसने एक महीने तक लड़ाई बन्द रखने का हुक्म दे दिया।

इस खबर से ईसाई राजाओं को बड़ा सन्तोष हुआ। अब उन्होंने आपस में बातचीत शुरू की। वे सुल्तान से सन्धि करना चाहते थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि ऐनगाज़ी का पादरी ईसाई था, लेकिन फिर भी मुसलमान उसका सम्मान करते थे। कहा तो यहां तक जाता था कि खुद सुल्तान उससे मिलने आया करता था।

इसलिए ईसाई राजाओं ने सन्धि के लिए ऐनगाज़ी के पादरी का उपयोग करना चाहा। उन्होंने सर केनेथ को अपने दूत के रूप में ऐनगाज़ी के पादरी थियोडोरिक के पास भेजा। राजाओं की प्रार्थना पर सुल्तान ने केनेथ को पादरी के मठ तक बेरोक-टोक जाने का परवाना भेज दिया।

राजा रिचार्ड का खेमा छावनी के बीचोंबीच था। उसमें राजा के आराम के लिए हर तरह का इन्तज़ाम था। राजा अपने पलंग पर पड़ा था। उसकी भूरी आंखें बीमारी के कारण और भी चमक रही थीं। उसके पलंग के पास ही उसके हथियार रखे हुए थे।

दोपहर का समय था। अचानक दूर कहीं बाजे बजने लगे। राजा ने अपने पास ही खड़े गिल्सलैण्ड के ठाकुर टामस डिवोकस की ओर देखकर पूछा, “ये बाजे कैसे बज रहे हैं ?”

डिवोकस ने राजा को समझाने की कोशिश की, लेकिन राजा नहीं माना। अन्त में उसे पता लगाने के लिए जाना ही पड़ा।

जब डिवोकस छावनी के सिरे पर पहुंचा तो उसने एक बड़ा विचित्र दृश्य देखा। वहां कुछ गोरे सिपाहियों के आस-पास कई मुसलमान सैनिक खड़े थे और तरह-तरह के बाजे बजा रहे थे। डिवोकस की समझ में कुछ नहीं आया। अचानक उसकी नज़र एक आदमी पर पड़ी, जिसे उसने फौरन पहचान लिया। वह था सर केनेथ, स्काटलैण्ड के पहाड़ी राज्य का सरदार।

केनेथ ने भी उसे पहचान लिया। डिवोकस उसके पास जा पहुंचा। हालांकि इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड के सम्बन्ध अच्छे नहीं थे, लेकिन चूंकि केनेथ धर्मयुद्ध में भाग लेने आया था, इसलिए डिवोकस न चाहते हुए भी उससे बात करने को तैयार था। केनेथ ने उससे कहा, “चौधरी, मैं महाराज की बीमारी दूर करने का उपाय करके आया हूं! क्या मैं उनसे मिल सकता हूं?”

डिवोकस ने अकड़कर जवाब दिया, “बिलकुल नहीं। मैं महाराज का अंगरक्षक हूं। जब तक मुझे तुम्हारा इरादा नहीं मालूम हो जाता, तब तक मैं तुम्हें महाराज के पास नहीं जाने दूंगा! वे बीमार हैं और इस समय सबसे नहीं मिल सकते।”

केनेथ को उसकी बात बुरी लगी। लेकिन फिर भी किसी तरह अपने को रोककर वह बोला, “हम दोनों धर्मयुद्ध के सैनिक हैं। इसके अलावा राजा का स्वास्थ्य मेरे लिए बहुत कीमती है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए मैं तुम्हारे इस अपमान को पी जा रहा हूं। मैं अपने साथ एक मुसलमान हकीम को लाया हूं जो राजा रिचार्ड का इलाज करने को तैयार है।”

डिवोकस बोला, “मुसलमान? वह दवा की जगह महाराज

को ज़हर दे दे तो? कहीं वह दुश्मन का भेजा हुआ आदमी ना हो!”

केनेथ बोला, “इतनी समझ तो मुझमें भी है। लेकिन इस हकीम को खुद सुल्तान सालादीन ने भेजा है। सालादीन एक बहादुर आदमी है। उससे हमारा युद्ध चल रहा है। लेकिन फिर भी वह हमारे साथ दगा नहीं करेगा! इसके अलावा बादशाह ने महाराज के लिए कई तरह की चीजें उपहार में भेजी हैं और बहुत से फल और मेवे भी भेजे हैं!”

डिवोकस बोला, “अच्छा, ठीक है। लेकिन तुम इस झंझट में कैसे फंस गए?”

सर केनेथ ने कहा, “मुझे ऐनगाजी के पादरी के पास एक सन्देश लेकर भेजा गया था।”

“कौन-सा सन्देश? और उस पादरी ने क्या जवाब दिया? ज़रा मुझे भी तो बताओ।”

“उस बात को बताने का मुझे हुक्म नहीं है।”

डिवोकस नाराज़ होकर बोला, “क्या कह रहे हो? क्या तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं है? तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैं इंग्लैंड के सेनापतियों की युद्ध-सभा का सदस्य हूं। कोई भी बात मुझसे गुप्त नहीं रह सकती!”

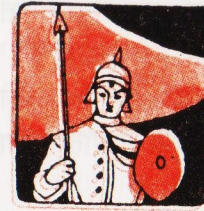
केनेथ ने जवाब दिया, “मैं कोई इंग्लैंड का गुलाम नहीं हूं। मैं तो धर्मयुद्ध में इंग्लैंड के झंडे के नीचे लड़ने के लिए आया हूं। इसलिए इंग्लैंड के सेनापतियों की गुप्त समिति से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। मैं तो इस धर्मयुद्ध में इकट्ठे हुए राजाओं की ओर से ऐनगाजी के पादरी के पास गया था और इसके सम्बन्ध में जो कुछ मुझे बताना चाहिए वही मैं बता रहा हूं।

इसे डिवोकस ने अपना अपमान समझा और वह वहां से चुपचाप चल देने की तैयारी करने लगा। वह बराबर केनेथ और उस मुसलमान हकीम को राजा के पास पहुंचाने से इनकार करता रहा। जब केनेथ ने उसे बहुत समझाने-बुझाने की कोशिश की तो अन्त में वह बोला, “सर केनेथ, तुम खुद ही सोचो, इस देश में किसी को ज़हर देकर मार डालना कोई मुश्किल काम नहीं। दुश्मन के भेजे हुए हकीम के हाथ में अपने महाराज की ज़िन्दगी सौंपना कैसे सम्भव हो सकता है?”

केनेथ बोला, “मैं विश्वास दिलाता हूं कि इसमें कोई खतरा नहीं है। मेरा एक अंगरक्षक भी इसी तरह की बीमारी में पड़ा था। इस हकीम ने उसे दवा दी और दो ही घंटे में उसे गहरी नींद आ गई। अब वह जल्दी ही ठीक हो जाएगा, इसमें कोई शक नहीं है।”

डिवोकस कुछ देर तक सोचता रहा। फिर वह केनेथ के साथ उसके अंगरक्षक को देखने के लिए चल पड़ा।

केनेथ का खेमा बहुत ही बुरी हालत में था। अन्दर झोंपड़ी में केनेथ का वह वफादार सैनिक बीमार पड़ा था और उसके पास ही हकीम बैठा हुआ था। उसकी दाढ़ी बहुत लम्बी थी। सिर पर वह तुर्की टोपी लगाए था। वह काफी बूढ़ा था, लेकिन फिर भी उसकी आंखें बहुत चमकीली थीं।



3

उधर राजा रिचार्ड के खेमे में उस समय ईसाई सेना के दो सेनापति बैठे थे। उनमें से एक का नाम ग्रांड मास्टर और दूसरे का नाम मार्क्विस् कोनरेड था। ग्रांड मास्टर एक विशेष सम्प्रदाय का प्रधान था, जिसके धर्मगुरु टेम्पलर कहलाते थे और जो अपने धर्म के प्रचार के लिए उपदेश के अलावा हथियार का प्रयोग भी करते थे।

टेम्पलर सम्प्रदाय के धर्मगुरुओं ने गुप्त षड्यन्त्र करके यह तय किया था कि किसी तरह सुल्तान सालादीन से सन्धि कर ली जाए और जेरूसलम में धर्म-प्रचार की सुविधा प्राप्त कर ली जाए।

मार्क्विस् कोनरेड मोन्सेराट नामक स्थान का एक बड़ा ज़मींदार था। वह हमेशा शाही ठाट-बाट से रहता था। ईसाई-समाज में लोग उसे बहुत स्वार्थी आदमी के रूप में जानते थे, हालांकि वह ऐसा नहीं था। मार्क्विस् ने राजा की ओर देखकर कहा, “महाराज, इस धर्मयुद्ध में भाग लेने के लिए जो राजा और सेनापति आए हैं, वे आपकी बीमारी से सारा उत्साह खो बैठे हैं।”

राजा उन लोगों के षड्यन्त्र को जानता था। वह मार्क्विस् की बात को सुनकर व्यंग्य से हँस पड़ा। इतने में ग्रांड मास्टर ने आगे बढ़कर प्रार्थना करते हुए कहा, “महाराज, दूसरे राजाओं ने हम लोगों को आपके पास एक प्रार्थना लेकर भेजा है। वे चाहते

हैं कि आप सुल्तान सालादीन के भेजे हुए मुसलमान हकीम की दवा नहीं लें। पहले हम लोग इस बात का पता लगा लेना चाहते हैं कि कहीं यह हकीम किसी बुरे इरादे से तो नहीं आया है।”

राजा रिचार्ड बोला, “आप दोनों ज़रा पास के कमरे में चले जाइए और देखिए कि मैं इस अरब हकीम का कैसा स्वागत करता हूँ।”

जब वे लोग चले गए तो राजा ने हकीम को अन्दर लाने का हुक्म दिया। थोड़ी ही देर बाद डिवोकस और सर केनेथ हकीम के साथ अन्दर दाखिल हुए।

लेकिन अन्दर घुसते ही हकीम की नज़र उन्हीं दोनों व्यक्तियों पर पड़ी, जो पास ही कमरे के दरवाज़े में खड़े थे। हकीम ने उनको सलाम किया। मार्क्विस् ने तो सलाम का जवाब दिया, लेकिन ग्रांड मास्टर ने उसे डांटकर कहा, “क्यों, तुम तो मुसलमान हो। भला तुम्हें किसने यह सलाह दी कि एक ईसाई राजा का इलाज करो !”

हकीम ने बहुत अदब से जवाब दिया, “इलाज के मामले में मुसलमान और ईसाई का भेद नहीं होता, और मैं तो खुदा का बन्दा हूँ। मेरी नज़र में सब बराबर हैं ! मेरा काम है बीमार का इलाज करना।”

इसके बाद ग्रांड मास्टर ने हकीम को यह धमकी दी कि अगर उसके इलाज से राजा को ज़रा भी नुकसान पहुंचा तो उसे जंगली घोड़े के पैरों में बांधकर घसीटा जाएगा और उसकी बोटी-बोटी काट डाली जाएगी।

हकीम ने जवाब दिया, “यह तो कोई इन्साफ नहीं हुआ। मैं दवा दे सकता हूँ। उसका असर खुदा के हाथ में है। मैं किसी को ज़िन्दगी नहीं दे सकता !” इसके बाद डिवोकस हकीम को

लेकर राजा के कमरे में दाखिल हुआ। उनके पीछे ग्रांड मास्टर और मार्क्विस् भी अन्दर जा पहुंचे। बाद में केनेथ भी अन्दर चला गया।

सबको अन्दर आया देखकर राजा रिचार्ड ने कहा, “तो तुम सब लोग आ पहुंचे ! क्या यह देखने आए हो कि देखें राजा रिचार्ड का क्या होता है ? अच्छा, हकीम को अपने साथ लाए हो ? खैर, आइए हकीम साहब, आप अपना काम शुरू कीजिए।”

हकीम को पहले ही डिवोकस से राजा की बीमारी का हाल मालूम हो गया था। वह राजा की नाड़ी देखने लगा। फिर उसने अपने झोले में से लाल रंग की एक पुटली निकाली और उसे एक तसले के पानी में डुबो दिया। थोड़ी देर बाद उसने वही पानी राजा को पीने के लिए दिया।

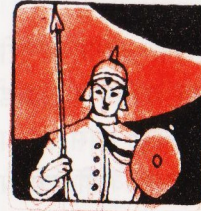
लेकिन राजा ने एकाएक हकीम का हाथ पकड़ लिया और कहने लगा, “हकीम साहब, आपने मेरी नाड़ी देखी। अब ज़रा मैं आपकी नाड़ी देख लूँ। मुझे भी नाड़ी देखना आता है।”

हकीम मुस्करा दिया। कुछ देर बाद राजा बोला, “ठीक है, हकीम साहब की नाड़ी एक बच्चे की तरह बिलकुल शांत चल रही है। यह ऐसे आदमी की नाड़ी नहीं है, जो किसी को ज़हर देने आया हो। डिवोकस ! यह आदमी बिलकुल निर्दोष है। हकीम साहब, आप जब सुल्तान के पास जाएं तो उन्हें मेरी ओर से धन्यवाद दीजिएगा और कहिएगा कि अगर मैं ज़िन्दा रहा तो उनके साथ द्वन्द्वयुद्ध लड़ूंगा और अगर मर गया तो उनके इस उपहार को अपने साथ लेता जाऊंगा !” यह कहकर राजा ने दवा पी ली। दवा पीने के बाद वह अचेत-सा होकर बिस्तर पर लेट रहा। हकीम ने सबको वहां से बाहर चले जाने के लिए कहा। डिवोकस को छोड़कर बाकी

सब बाहर निकल गए।

ग्रांड मास्टर और मार्क्विस् वहां से टहलते हुए एक बिल्कुल एकान्त स्थान में जा खड़े हुए और दबी आवाज़ में बात करने लगे। मार्क्विस् बोला, “यह मुसलमान हकीम अपने जादू से रिचार्ड को ठीक करे, उसके पहले ही हमें कुछ-न-कुछ कर लेना चाहिए। हमें कोशिश करनी चाहिए कि फ्रांस के राजा और आस्ट्रिया के ड्यूक के साथ राजा रिचार्ड का कोई झगड़ा हो जाए। अगर ऐसा हुआ तो वह ईसाई सेना के सेनापति की तरह जेरुसलम की ओर नहीं बढ़ सकेगा, उसे अपने मुट्ठी-भर अंग्रेज़ सैनिकों के अलावा और किसी की मदद नहीं मिलेगी।”

ग्रांड मास्टर ने आसपास देखकर धीरे-से कहा, “इतनी दूर ही क्यों सोचते हो ? मेरा तो ख्याल है कि राजा को ठीक ही नहीं होने दिया जाए !” कुछ समझ रहे हो मेरा मतलब ?”



4

दूसरे दिन आस्ट्रिया के ड्यूक लियोपोल्ड ने मोन्सेराट के नवाब मार्क्विस् को अपने यहां दावत दी। बातचीत के दौरान में मार्क्विस् ने आस्ट्रिया के राष्ट्रीय झंडे की ओर इशारा किया जिस पर गरुड़ का चित्र बना था। फिर उसने कहा, “इस झंडे को देखो, और उधर रिचार्ड के उस झंडे की ओर देखो, जिस पर सिंह बना हुआ है ! उसके आगे तुम्हारे झंडे की कद्र कुछ नहीं ! देख लो, रिचार्ड का झंडा सबसे बड़ा और सबसे ऊपर फहरा रहा है। ऐसा लगता है, जैसे रिचार्ड हम सबका सम्राट है !”

यह सुनकर आस्ट्रिया के ड्यूक को बड़ा बुरा लगा और उसका गुस्सा बढ़ गया। लेकिन वह बोला, “लगता है, तुम मज़ाक कर रहे हो।”

मार्क्विस् बोला, “भला मज़ाक मैं कैसे कर सकता हूँ ! असल में बात यह है कि जब फ्रांस जैसे देश के राजा फिलिप और आस्ट्रिया के ड्यूक ऐसे अपमान को सहन कर रहे हैं तो मेरे जैसे एक छोटे-से नवाब की तो बिसात ही क्या है !”

अब ड्यूक अधिक सहन नहीं कर सका। वह बोला, “मैंने कई बार फिलिप को यह बात कही। इंग्लैंड जैसे एक छोटे-से टापू के गरीब राजा को अगर अपना सरदार बनाया गया तो यह सभी राजाओं का अपमान है। लेकिन वह इस बात को मानता ही नहीं

है। वह कहता है कि हम लोग धर्मयुद्ध में भाग लेने आए हैं। हमें आपस में झगड़ा नहीं करना चाहिए।”

मार्क्विस् थोड़ी देर तक चुप बैठा रहा और फिर बोला, “सारी दुनिया जानती है कि फिलिप एक चतुर आदमी है। राजा रिचार्ड को सरदार बनाने के पीछे हो सकता है कि उसका कोई खास उद्देश्य हो। लोग तो यह भी सोच सकते हैं कि तुम भी किसी विशेष कारण से ही रिचार्ड की नेतागिरी स्वीकार कर रहे हो।”

इस तरह धीरे-धीरे मार्क्विस् ने इयूक को बहुत उत्तेजित कर दिया। यहां तक कि अन्त में वह बोल उठा, “कौन कहता है कि मैंने रिचार्ड को अपना नेता बनाया है? मैं आस्ट्रिया का इयूक हूं और रिचार्ड एक मामूली-से टापू का राजा है। इधर उसका घमंड बढ़ गया है। भला इसे हम कैसे बरदाश्त कर सकते हैं! हम उस अंग्रेज़ भिखमंगे को इस गुस्ताखी के लिए पूरा-पूरा सबक सिखाएंगे।”

फिर वह एकदम जोश में खड़ा हो गया और अपने आसपास बैठे हुए सिपाहियों से बोला, “आस्ट्रिया के वीर सैनिको, इंग्लैंड का वह भिखमंगा राजा हमारा अपमान कर रहा है। चलो, सेण्ट जार्ज के पहाड़ पर हम अपना झंडा फहराएं और अंग्रेजों के झंडे को उखाड़ फेंकें।”

इस समय वह इतने जोश में था कि फौरन तलवार खींचकर अपने खेमे के बाहर आ गया। राजा को आगे बढ़ते देखकर उसके सिपाही भी हथियार लेकर चल पड़े।

कुछ दूर जाने पर अचानक उसे कोई बात याद आ गई। उसने पीछे घूमकर मार्क्विस् की ओर देखा। लेकिन मार्क्विस् वहां कहीं था ही नहीं। वह तो जैसे आग लगाकर चलता बना था।

जाते-जाते वह आस्ट्रिया के सेनापति और दूसरे लोगों से कहता गया, “मेरा मतलब यह नहीं था कि इयूक तुरन्त तलवार लेकर निकल पड़ें। उनको पूरी बात पर शांति से विचार करना चाहिए था। अचानक इस शोरगुल से क्या फायदा होगा?”

उधर इंग्लैंड की छावनी में राजा रिचार्ड दवा के असर से कुछ-कुछ ठीक हो रहा था। उसका रोग करीब-करीब जाता रहा था। वह बिस्तर में बैठे-बैठे लोगों से बातें करने लगा। उसने डिवोकस से कहा, “इस हकीम ने मेरी जान बचाई है। अपने खज़ाने में जितना भी धन है, वह सब मैं इसको दान कर देना चाहता हूं।”

हकीम बोला, “खुदा के रहम से मुझे जो हुनर मिला है उसे मैं बेचता नहीं हूं। आप बच गए यह खुदा का शुक्र है। इससे मुझे जो सन्तोष हुआ है, वही मेरा इनाम है। अब आप आराम कीजिए...”

इसी बीच में छावनी में ज़ोरों से हल्ला होने लगा। राजा ने डिवोकस को बाहर जाकर पता लगाने का हुक्म दिया, लेकिन इसी बीच मार्क्विस् अन्दर दाखिल हुआ। उसने अन्दर आकर राजा को सलाम किया। राजा ने उससे पूछा, “यह कैसी गड़बड़ है?”

मार्क्विस् बोला, “आस्ट्रिया के इयूक की मूर्खता है, और क्या! अगर उनमें थोड़ी-सी भी अक्ल होती, तो भला वे सेण्ट जार्ज के पहाड़ पर लगे इंग्लैंड के झंडे को नीचे उतारने की हिम्मत कर सकते थे!”

“क्या? क्या कहा?” राजा ज़ोर से चीख पड़ा और उठने की तैयारी करने लगा।

मार्क्विस् बोला, “आप शान्त रहिए महाराज! आपकी

तबियत अभी ठीक नहीं हुई है, और फिर अगर एक मूर्ख कोई गलती करता है तो आप जैसे शूरवीर को इस तरह उत्तेजित नहीं होना चाहिए।”

लेकिन राजा अब कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था। वह तलवार खींचकर खड़ा हो गया और बोला, “अब मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता। इन लोगों ने मुझे समझ क्या रखा है ! इयूक की यह हिम्मत ! अभी तो मैं ज़िन्दा हूँ।”

यह कहते-कहते राजा ने फौरन युद्ध की पोशाक पहनी और वह अपने खेमे के बाहर निकल आया। डिवोकस भी उसके पीछे चल पड़ा। जाते समय वह एक पहरेदार को कहता गया, “लार्ड सेल्सवरी से कहो कि पूरी फौज लेकर वे फौरन सेण्ट जार्ज की पहाड़ी पर पहुंच जाएं।”

रिचार्ड तैजी-से बढ़ा जा रहा था। उसे इस बात का भी ख्याल नहीं था कि उसके पीछे उसका कोई सैनिक आ रहा है या नहीं। जब वह हाथ में तलवार लिए हुए केनेथ के खेमे के पास से निकला तो केनेथ को यह सब देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह कुछ समझ ही नहीं सका कि कहां तो राजा बीमार होकर बिस्तर पर पड़ा था और कहां इस समय तलवार लेकर किसी से लड़ने के लिए आगे बढ़ा जा रहा है।

केनेथ ने डिवोकस से कुछ पूछना चाहा। डिवोकस ने संकेत से उसे कुछ बताया। केनेथ पूरी बात नहीं समझ सका, लेकिन इतना ज़रूर जान गया कि कोई बड़ा संकट आ पड़ा है। इसलिए वह भी अपनी ढाल-तलवार लेकर डिवोकस के साथ-साथ राजा के पीछे चल पड़ा।

इधर अंग्रेजी छावनी में हलचल मच गई। सिपाहियों में

अफवाह फैल गई कि आस्ट्रिया के इयूक ने राजा रिचार्ड की हत्या कर दी है। कोई कहता कि दुश्मनों ने ईसाई छावनी पर हमला कर दिया है।

देखते-देखते सब सैनिक तैयार हो गए और अपने सेनापति के हुक्म का इन्तज़ार करने लगे।

उधर तब तक राजा रिचार्ड सेण्ट जार्ज की पहाड़ी के पास जा पहुंचा। पहाड़ी पर इस समय भी इंग्लैंड का झंडा फहरा रहा था। मार्किवस ने जो बात राजा को बताई थी, वह पूरी तरह सही नहीं थी। इंग्लैंड के झंडे को उखाड़ फेंकने की हिम्मत आस्ट्रिया के इयूक लियोपोल्ड में नहीं थी। इसलिए उसने उसके पास ही आस्ट्रिया का झंडा लगा दिया था।

लेकिन अपनी छोटी-सी बहादुरी पर भी लियोपोल्ड बड़ा खुश था। उसने वहीं शराब का एक पीपा मंगवाया और अपने सैनिकों को शराब बांटना शुरू किया। सिपाही शराब पीने लगे और खुशी से नाचने लगे।

अचानक सिपाहियों की भीड़ में तीन आदमी घुस आए और धक्का मारते हुए आगे की ओर बढ़ने लगे। सबने पहचान लिया कि यह कौन हैं। भला राजा रिचार्ड और उसके बहादुर साथियों को कौन नहीं पहचानता !

राजा ने आगे बढ़कर आस्ट्रिया का झंडा उखाड़कर फेंक दिया और गरजकर कहा, “इस चिथड़े को इंग्लैंड के राष्ट्रध्वज के पास किसने खड़ा किया ? किसकी इतनी हिम्मत हुई ?”

इयूक लियोपोल्ड वैसे तो साहसी आदमी था, लेकिन एकाएक राजा रिचार्ड को वहां आया देखकर वह हक्का-बक्का रह गया। फिर ज़रा हिम्मत करके वह बोला “यह हिम्मत आस्ट्रिया के इयूक

लियोपोल्ड ने की है !”

“अच्छा, यह बात है ! तो देख लो, इयूक और उसके झंडे को इंग्लैंड का राजा कैसी इज्जत देता है !” यह कहकर उसने आस्ट्रिया के झंडे के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उन्हें अपने पैरों से रौंदना शुरू किया।

बस फिर क्या था, आस्ट्रिया के सिपाहियों में खलबली मच गई। लोग लड़ने के लिए उतावले हो गए। उनके सेनापति बलेनरोड ने तलवार खींचकर गरजते हुए कहा, “आस्ट्रिया के बहादुरो ! इस आदमी ने हमारे देश की राष्ट्रीय पताका का अपमान किया है। हमारे राजा और हमारे देश का अपमान किया है। इसको मालूम होना चाहिए कि इसका नतीजा क्या होता है। आओ, हम लोग इस अपमान का बदला लें !”

यह कहकर अचानक उसने अपनी तलवार से राजा रिचार्ड पर हमला किया। इस हमले की किसी को उम्मीद नहीं थी। रिचार्ड इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। अगर केनेथ ने आगे बढ़कर इस वार को अपनी ढाल पर नहीं झेल लिया होता तो राजा रिचार्ड वहीं ढेर हो गया होता।

रिचार्ड शेर की तरह गरजकर बोला, “मैंने प्रतिज्ञा की थी कि धर्मयुद्ध में भाग लेने के लिए आए हुए किसी भी सैनिक पर हमला नहीं करूंगा। इसलिए बलेनरोड, आज तुम बच गए ! मैं तुम्हारी जान नहीं लूंगा, लेकिन फिर भी ऐसी सीख दूंगा कि तुम्हें जिन्दगी-भर याद रहे।”

यह कहकर रिचार्ड आगे झपटा। उसने आस्ट्रियन सेनापति की कमर में हाथ डालकर उसे ज़मीन से ऊपर उठा लिया, और फिर उसे घुमाकर गेंद की तरह दूर फेंक दिया। बलेनरोड पहाड़ी

[illegible]

से टकराकर लुढ़कता हुआ जोर से नीचे जा गिरा। उसका शरीर कुछ क्षणों के लिए बिलकूल मुर्दे की तरह पड़ा रहा।

रिचार्ड अभी-अभी भयंकर बीमारी से उठा था, लेकिन अभी भी उसमें इतनी ताकत है, इसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी। आस्ट्रिया के सैनिक तो यह देखकर दंग रह गए। आगे बढ़ने की किसी में हिम्मत नहीं हो रही थी। वे सब मिलकर रिचार्ड पर हमला कर सकते थे। लेकिन फिर भी उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी, क्योंकि वे जानते थे कि रिचार्ड और उसके दोनों साथी सैकड़ों सिपाहियों के बराबर हैं।

लेकिन इसी बीच वहां फ्रांस का राजा आ पहुंचा। उसके आने से ऐसा लगा कि वह झगड़ा यही खत्म हो जाएगा। फिलिप शांत स्वभाव का आदमी था। चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो, वह अपने ऊपर से काबू नहीं खोता था। उसे आते देखकर रिचार्ड ने भी अपने को कुछ संभाल लिया और धीरे-से अपना पैर आस्ट्रिया के झंडे पर से हटा लिया।

फिलिप ने आकर आस्ट्रिया के इयूक लियोपोल्ड को समझाया कि सेण्ट जार्ज की पहाड़ी पर इंग्लैंड का झंडा फहराता है तो इसमें दूसरे राजाओं को अपना अपमान नहीं मानना चाहिए। राजा रिचार्ड न सिर्फ सबसे ज़्यादा ताकतवर है बल्कि सारे यूरोप के राजाओं ने धर्मयुद्ध में उसे अपना सरदार बनाया है। इसलिए अगर उसका झंडा सबसे ऊपर फहराता है तो इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है। फिलिप ने न सिर्फ लियोपोल्ड को बुरा-भला कहा बल्कि राजा रिचार्ड को भी इस तरह गुस्सा करने के लिए ज़रा सख्ती से दो-एक बातें कहीं।

इस तरह फिलिप के बीच में आ जाने से उस दिन का झगड़ा

□□□

वहीं समाप्त हो गया। फिलिप लियोपोल्ड को अपने साथ लेकर वहां से लौट गया। उसके जाने के बाद राजा रिचार्ड ने सर केनेथ की ओर मुड़कर कहा, “स्काटलैंड के बहादुर नवाब, अभी तुमने एक खतरे से मेरी जान बचाई ! इसके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। लेकिन रात के इस अंधेरे में अपनी राष्ट्रीय पताका को यहां अकेले छोड़कर जाने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही है। हो सकता है, इंग्लैंड के शत्रु रात में इसे चुरा ले जाएं। तब हमारी प्रतिज्ञा का कोई मूल्य नहीं रहेगा। तुम रात वहीं पहरा दो। अगर दुश्मन हमारे झंडे पर हमला करते हैं तो तुरही बजाकर हमें सूचित करना। हम फौरन तुम्हारी मदद के लिए आ पहुंचेंगे !”

केनेथ ने यह काम स्वीकार कर लिया। वह थोड़ी देर के लिए अपने खेमे में गया और अच्छी तरह ज़िरहबख्तर पहनकर और सब तरह के हथियारों से लैस होकर फिर से सेण्ट जार्ज की पहाड़ी पर लौट आया। इस बार उसका वफादार कुत्ता ‘रोज़वाल’ भी उसके साथ था।



5

आधी रात का समय था। केनेथ सेण्ट जार्ज की पहाड़ी पर इंग्लैंड के झंडे के आगे पहरा दे रहा था। इतने में अचानक उसका कुत्ता भौंकते हुए आगे की ओर झपटा।

केनेथ समझ गया कि पास ही कोई दुश्मन आ पहुंचा है। उसने कड़कती हुई आवाज़ में पूछा, “कौन है ?”

किसी ने जवाब दिया, “अपने कुत्ते को वापस बुला लो, वरना मैं तुम्हारे पास कैसे आ सकता हूं ?”

केनेथ ने कुत्ते को वापस बुला लिया। थोड़ी ही देर में एक बौना-सा आदमी झाड़ी के पीछे से बाहर निकला। उसने पास आकर केनेथ को रत्नजटित अंगूठी दी और कहा, “इंग्लैंड के राजा के अन्तःपुर में रहनेवाली कोई सुन्दरी आज रात को एक ज़रूरी काम से मिलना चाहती है।”

यह बौना राज रिचार्ड का सेवक था। इसका नाम था नेक्टोवेनस। उसने आगे कहा, “वह सुन्दरी यहीं पास में तुम्हारी राह देख रही है। अगर तुम चाहो तो कुछ मिनट में ही उससे यहां वापिस आ सकते हो।

केनेथ ने अपने वफादार कुत्ते को यह हुक्म दिया, “देखो रोज़वाल, होशियार रहना, किसी आदमी को पहाड़ी पर न चढ़ने देना !” यह कुत्ता बड़ा समझदार था और अपने मालिक के हुक्म

को पहचानता था। उसने अपना सिर हिलाकर उसकी आज्ञा को स्वीकार किया। केनेथ बौने के साथ चल पड़ा।

लेकिन असली बात कुछ और ही थी। राजा रिचार्ड के अन्तःपुर की सुन्दरियों में एक होड़ लगी थी। एक पक्ष का कहना था कि केनेथ आज रात में झंडे के पास से नहीं हट सकता, और दूसरे पक्ष ने यह दावा किया था कि केनेथ को बड़ी आसानी से झंडे के पास से हटाया जा सकता है। इसीलिए वह बौना राजा की बहन का नाम लेकर और अंगूठी दिखाकर केनेथ को बहकाने आया था।

वह बौना केनेथ को राजा के अन्तःपुर में ले गया। वहां कई सुन्दरियां बैठी थीं। उन्हीं में राजा की बहन भी थी। इतनी रात गए केनेथ को वहां बुलाने का कोई कारण नहीं था। फिर भी उन लोगों ने किसी तरह बातचीत करके केनेथ को कुछ देर वहां रोके रखा और फिर माफी मांगकर उसे विदा कर दिया।

केनेथ छावनी से निकलकर सेण्ट जार्ज की पहाड़ी की ओर चल पड़ा। लेकिन इस बीच जो होना था सो हो चुका था। वह यह देखकर भौंचक्का रह गया कि पहाड़ी पर इंग्लैंड का झंडा नहीं था। केनेथ दौड़ता हुआ पहाड़ी पर पहुंचा। वहां उसने देखा कि उसका कुत्ता लहलुहान हुआ पड़ा था। ऐसा लगता था, जैसे अब वह थोड़ी देर में ही मर जाएगा।

केनेथ इधर-उधर दौड़कर झंडे की खोज करने लगा, लेकिन असफलता ही उसे हाथ लगी। बहुत कोशिश करने पर भी उसे चोर का पता नहीं लगा। अन्त में निराश होकर वह अपने स्वामीभक्त कुत्ते के पास लौट आया। कुत्ता लगभग निर्जीव हो चुका था, लेकिन अपने मालिक को पास आया देखकर उसने आंखें



खोल दीं और उसका हाथ चाटना शुरू कर दिया।

केनेथ ने देखा कि एक तीर कुत्ते के कंधे में घुसा हुआ है। वह उसे बाहर निकालने लगा तो कुत्ता मारे दर्द के चीख पड़ा। केनेथ से अपने प्यारे कुत्ते की यह दशा देखते नहीं बनी। यह सोचकर उसे और भी दुःख हो रहा था कि उसकी मूर्खता के कारण ही आज उसके कुत्ते को ऐसी बुरी मौत मरना पड़ रहा है। इस बात से उसकी आंखों में आंसू आ गए और वह बच्चों की तरह रोने लगा।

लेकिन इसी बीच किसी की आवाज़ उसके कानों में पड़ी, “दुःख तो आसमान से बरसने वाले पानी की तरह है। हर आदमी पर दुःख आता है लेकिन जिस तरह बरसात में पानी बरसने से धरती पर तरह-तरह के फल-फूलों का जन्म होता है, उसी तरह दुःख के दिनों में ही मनुष्य के मन में महानता का जन्म होता है।”

इस गम्भीर आवाज़ को सुनकर केनेथ ने पीछे मुड़कर देखा। उसके पास ही वह अरबी हकीम खड़ा था। केनेथ ने फौरन अपने आंसू पोंछ डाले और कुत्ते की ओर इशारा किया। हकीम ने उसे समझाया कि बहुत दुःख करने की ज़रूरत नहीं है। ईश्वर जो चाहेगा वही होकर रहेगा। फिर वह कुत्ते के पास बैठकर उसके घावों को देखने लगा। उसने अपने झोले में से कुछ तेज़ हथियार निकाले और उसकी सहायता से उसने कुत्ते के शरीर से टूटा हुआ तीर बाहर निकाला। तीर के बाहर निकलते ही कुत्ते की देह से खून का फव्वारा छूट पड़ा। हकीम ने पट्टी बांध कर उसके बहते हुए खून को रोक दिया और दूसरे घावों पर भी मरहम-पट्टी कर दी।

फिर हकीम ने केनेथ से कहा, “इस कुत्ते को तुम फिलहाल मुझे सौंप दो। मुमकिन है, मैं अपनी दवा से इसे जिला सकूँ। मैं इसे अपनी छावनी में ले जाना चाहता हूँ।”

केनेथ ने फौरन यह मान लिया। अब उसकी समझ में आ रहा था कि आगे उसे कितनी बड़ी मुसीबत का सामना करना है। इंग्लैंड के झंडे के चोरी चले जाने के कारण क्रोधी स्वभाव का राजा रिचार्ड उसे निश्चय ही फांसी की सज़ा देगा। इसके अलावा उसे अपने प्यारे कुत्ते को अपने से दूर भेजना पड़ रहा था। उसने बहुत कड़ा दिल करके हकीम को अपना प्यारा कुत्ता सौंप दिया।

हकीम ने ताली बजाकर अपने नौकरों को वहां बुलाया। देखते-देखते अंधेरे में तीन-चार मुसलमान सिपाही वहां आ पहुंचे। उन्होंने केनेथ के कुत्ते को उठा लिया। जब वे उसे ले जाने लगे तो केनेथ अपने को नहीं रोक सका और बोला, “काश, इसकी जगह मैं मर जाता तो बहुत अच्छा होता।”

हकीम ने उसे बहुत समझाया-बुझाया। बातचीत के दौरान में केनेथ ने उसे बताया कि किस तरह उसे इंग्लैंड के झंडे की रक्षा का काम सौंपा गया था और फिर किस तरह उसे धोखा दिया गया।

हकीम ने भी केनेथ को बहुत-सी बातें बताईं। उसने यह भी बताया कि ईसाई राजाओं ने कई बार ऐनगाज़ी के पादरी के ज़रिये सुल्तान सालादीन से सन्धि करने का प्रयत्न किया था।

“हां, पिछली बार तो मैं ही ऐनगाज़ी के पादरी के पास एक सन्देश लेकर गया था। लेकिन उसमें क्या लिखा था, यह मुझे नहीं मालूम।”

“लेकिन मुझे मालूम है। उस चिट्ठी में भी सुलह की बात कही गई थी, राजा रिचार्ड को अंधेरे में रखकर दूसरे राजाओं ने सुल्तान से सुलह का प्रस्ताव रखा था। उसमें जो शर्तें थीं, वे भी मुझे मालूम हैं।”

केनेथ को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला,

“अच्छा, क्या शर्तें थीं, ज़रा मुझे भी बताओ।”

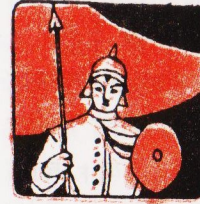
हकीम मुस्कराकर कहने लगा, “उसमें एक शर्त यह थी कि अगर सुल्तान सुलह के लिए तैयार हो जाएगा तो राजा रिचार्ड की बहन का विवाह उसके साथ कर दिया जाएगा। सुल्तान ने यह शर्त मंजूर कर ली है। इसलिए अब इसमें कोई शक नहीं कि सुलह जल्दी ही हो जाएगी।”

केनेथ ने आश्चर्य का ठिकाना न रहा। ईसाई के साथ मुसलमान का विवाह ! भला यह कैसे हो सकता है ! और इस सारे षड्यन्त्र के बारे में राजा रिचार्ड को कुछ भी नहीं बताया गया ! केनेथ का मन हुआ कि इसी समय जाकर राजा को सारा किस्सा बता दिया जाए।

केनेथ वहां से चलने के लिए तैयार हुआ तो हकीम ने उसे फिर से सलाह दी कि अब तुम राजा रिचार्ड के पास लौटने की बजाय सुल्तान के पास लौट जाओ। वह तुम्हें आराम से रखेगा। अगर तुम रिचार्ड के पास जाओगे तो हुक्म न मानने के कारण वह तुम्हें कड़ी-से-कड़ी सज़ा देगा। हो सकता है, वह तुम्हें फांसी पर चढ़वा दे।

लेकिन केनेथ अपने निश्चय से डिगा नहीं। वह बोला, “मैंने राजा की आज्ञा का पालन न करके जो पाप किया है, उसका प्रायश्चित्त मुझे करना ही चाहिए। मैं राजा को इस सारे षड्यन्त्र की खबर दे देना अपना कर्तव्य समझता हूं।

वहां से केनेथ अपने तम्बू में लौट आया। तब तक उसका साथी अच्छा हो चुका था। केनेथ ने उसे वापस अपने देश लौट जाने की सलाह दी और फिर वह राजा रिचार्ड के खेमे की ओर बढ़ चला।



6

अभी सवेरा नहीं हुआ था। राजा जागा नहीं था। डिवोकस जागकर बाहर आया। उसने केनेथ को राजा के खेमे में जाते हुए देखकर कड़े स्वर में पूछा, “इस तरह बिना आज्ञा के और बिना किसी से पूछे-ताछे अन्दर घुस आने का क्या मतलब है, सर केनेथ ?”

लेकिन तब तक राजा की नींद खुल गई। उसने डिवोकस की आवाज़ सुन ली थी। वह अपने खेमे में से बोला, “डिवोकस, केनेथ को अन्दर आने दो ! केनेथ शायद मुझसे यही कहने आया है कि सेण्ट जार्ज की पहाड़ी पर रात-भर इंग्लैंड का झंडा फहराता रहा। क्यों केनेथ, यही न ?”

एक क्षण के लिए केनेथ चुप रहा। उसकी समझ में नहीं आया कि इसका क्या जवाब दे। लेकिन फिर वह बोला, “नहीं महाराज, मैं बड़ा अभागा हूं ! झंडा रात में चोरी चला गया !”

राजा को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। वह बोला, “और इस बात को मुझे सुनाने के लिए तुम अब तक जीवित रह गए ! मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं हो रहा है। कहीं तुम मज़ाक तो नहीं कर रहे हो ?”

केनेथ बोला, “मज़ाक ! मेरा दुर्भाग्य है कि सारा अपमान मुझे ही सहन करना होगा। महाराज, मैं बिलकुल सच-सच कह रहा हूं !”

राजा यह सुनकर गुस्से से चीख उठा, “हे भगवान, यह आदमी क्या कह रहा है ! मुझे तो इसकी बात पर विश्वास नहीं होता। डिवोकस, ज़रा तुम जाकर पता लगाओ क्या मामला है !”

इसी बीच अंग्रेज़ी सेना का सेनापति दौड़ता हुआ अन्दर आया और बोला, “महाराज ! महाराज गुज़ब हो गया। हमारी राष्ट्रीय पताका चोरी चली गई। शायद उसका रक्षक मारा गया। पहाड़ी के ऊपर खून फैला पड़ा है !” लेकिन जैसे ही उसकी नज़र केनेथ पर पड़ी वह चौंककर बोला, “अरे, यह क्या ! मैं यह क्या देख रहा हूँ ? सर केनेथ तो जीवित हैं !”

राजा ने गुस्से से चीखते हुए कहा, “यह ? यह तुम एक विश्वासघाती की शक्ति देख रहे हो ! इसके गुनाह की सज़ा मौत के अलावा और क्या हो सकती है !” राजा को इतना गुस्सा आया कि उसने केनेथ को मारने के लिए अपनी बड़ी भारी गदा उठा ली। लेकिन फिर अचानक कुछ सोचकर बोला, “वहां खून फैला पड़ा है ? तो क्या तुमने दुश्मन के साथ युद्ध किया था केनेथ ?”

केनेथ बोला, “महाराज, आप मुझे चाहे जो सज़ा दीजिए, मैं चुपचाप सब कुछ सहन कर लूंगा ! मैं झूठ नहीं बोलूंगा। दुश्मन से मेरी लड़ाई नहीं हुई। मैं वहां था ही नहीं। सेनापति ने वहां जो खून देखा है, वह मेरे वफादार कुत्ते का खून है !”

राजा ने फिर से केनेथ पर वार करने के लिए अपनी गदा उठाई, लेकिन इस बार डिवोकस ने उसे बीच में ही रोककर कहा, “नहीं महाराज, आप अपने हाथों उसकी हत्या न कीजिए। इस आदमी को इंग्लैंड के झंडे की रक्षा का काम सौंपकर हमने खुद गलती की है। स्कॉटलैंड के लोग पहले ही से अंग्रेज़ों के दुश्मन हैं। हमें उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए था। आप रहने दीजिए,

हम लोग खुद इसकी सज़ा का इन्तज़ाम करेंगे।”

रिचार्ड ने डिवोकस की बात मान ली। उसकी आज्ञा से डिवोकस केनेथ को खेमे के बाहर ले गया। केनेथ को जेलखाने के खेमे में बन्द कर दिया गया और हथकड़ी और बेड़ी पहना दी गई। कुछ देर बाद एक पादरी उसे अन्तिम उपदेश देने के लिए आया। यह और कोई नहीं ऐनगाज़ी का पादरी ही था।

कुछ देर बाद राजा ने जल्लाद को अपने पास बुलवाया। उसने राजा को सलाम किया और पूछा, “हुज़ूर, कैदी का सिर काटने के बाद उसके सिर का क्या किया जाए ?”

राजा ने कहा, “उसे कब्र में दफन कर दिया जाए ! यह विश्वासघाती भले ही हो लेकिन बहादुर आदमी है। मैं युद्ध में इसकी बहादुरी देख चुका हूँ।”

जल्लाद राजा को सलाम करके वहां से चला गया।

कुछ देर बाद रानी और राजा की बहिन वहां पहुंची। इन्हीं लोगों के कारण, खासतौर से रानी की ज़िद के कारण, केनेथ मुसीबत में फंसा था। रानी ने राजा के सामने अपना अपराध स्वीकार किया। यही नहीं, दोनों ने राजा के पैरों में गिरकर माफी मांगी।

लेकिन राजा टस-से-मस नहीं हुआ। वह केनेथ को माफ करने के लिए तैयार ही नहीं था। लड़ाई के ज़माने में जो सिपाही अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, उसकी सज़ा मौत के अलावा और कुछ नहीं हो सकती। राजा जब किसी तरह राज़ी नहीं हुआ तो रानी और राजकुमारी आंसू बहाती हुई वहां से चली गईं।

उन लोगों के जाने के बाद ऐनगाज़ी का पादरी अन्दर आया। उसने राजा से कहा, “महाराज, अभी कुछ देर पहले ही मुझे केनेथ

से एक रहस्य की बात मालूम हुई है। उसे सुनने के बाद मुझे ऐसा लगता है कि उसे मौत की सज़ा देना ठीक नहीं होगा। उसकी जान लेने के बाद आपको जीवन-भर पछताना पड़ेगा, क्योंकि उसने जो भेद मुझे बताया है वह आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मैं तो वह आपको बता नहीं सकता क्योंकि पादरी का काम यह नहीं है कि वह लोगों के भेद दूसरों को बताया करे।”

इतने पर भी राजा नहीं माना। उसने कहा, “मैं अपनी आज्ञा वापस नहीं ले सकता। केनेथ को यह सज़ा भुगतनी ही पड़ेगी !” यह सुनकर पादरी चुपचाप वहां से चल दिया।

उसके जाने के बाद हकीम वहां पहुंचा। उसने भी राजा से कहा कि केनेथ को छोड़ दिया जाए। हकीम ने राजा के प्राण बचाए थे इसलिए राजा उसकी बात सुनकर कुछ असमंजस में पड़ गया। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि सब लोग कैसे अचानक केनेथ के पक्ष में हो गए ! हकीम की बात सुनकर वह अपने फैसले पर फिर से विचार करने के लिए मजबूर हो गया। उसने न चाहते हुए भी केनेथ को छोड़ देने का हुक्म दिया। लेकिन साथ ही उसने हकीम से कहा, “इस विश्वासघाती आदमी को अपने साथ लेते जाओ !”

हकीम केनेथ को अपने साथ लेकर सुल्तान के पास चल पड़ा। राजा ने हकीम के साथ ही सुल्तान के नाम एक सन्देश भेजा, जिसमें उसने सुल्तान को धन्यवाद दिया था कि उसने बीमारी के समय अपने खास हकीम को भेजकर राजा की मदद की थी। भेंट के रूप में राजा ने अपने बौने सेवक नेक्टावेनस को भी हकीम के साथ भेज दिया। तीनों उसी दिन जेरूसलम की ओर रवाना हो गए।



7

जेरूसलम पहुंचने पर केनेथ को सुल्तान के महल के कमरे में ठहराया गया। यहां उसे किसी बात की कमी नहीं थी। आराम की हर चीज़ मौजूद थी। फर्श पर ईरानी गलीचा बिछा हुआ था। दरवाज़े और खिड़कियों पर रेशमी परदे लटके हुए थे।

सवेरे जैसे ही केनेथ ने आंखें खोलीं, थोड़ी देर बाद अचानक किसी ने दरवाज़े के बाहर से पूछा, “क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?” यह आवाज़ हकीम की थी।

केनेथ को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, “आप तो इस घर के मालिक हैं। मैं तो यहां गुलाम की तरह हूं। भला मालिक को अन्दर आने से कौन रोक सकता है ?”

हकीम अन्दर आया और कहने लगा, “यह तुम क्या कह रहे हो ! भला मैं तुम्हारा मालिक कैसे हो सकता हूं।”

लेकिन यह क्या ? यह तो हकीम नहीं था। हकीम की जगह यह कौन है ! आवाज़ ज़रूर हकीम जैसी लगती थी, लेकिन यह तो कोई और नहीं खुद वही तुर्क सरदार सिरकफ था, जिससे केनेथ पहले मिल चुका था और कुछ दिन पहले रास्ते में अकेले लड़ चुका था।

केनेथ को आश्चर्य से अपनी ओर देखते हुए देखकर सिरकफ हँस पड़ा और बोला, “मैंने अपना भेस बदल रखा था, इसीलिए

तुम मुझे पहचान नहीं सके। ऐनगाजी के पादरी के पास जब हम दोनों गए थे तब मुझे यह मालूम हुआ कि न सिर्फ तुम्हारा नौकर बल्कि राजा रिचार्ड भी बीमार होकर छावनी में पड़ा है। तुम्हारे यहां ऐसा कोई आदमी नहीं था, जो राजा को ठीक कर सकता। खुद हमारे देश में भी ऐसा कोई आदमी नहीं था जो इस भयानक बीमारी से तुम्हारे राजा को ठीक कर पाता। लेकिन खुदा की मेहरबानी से मुझे एक विचित्र शक्ति मिली हुई है। मेरे पास एक चमत्कारी तावीज़ है। उस तावीज़ को पानी में हिलाकर अगर उस पानी को पिया जाए तो हर तरह का रोग दूर हो सकता है। इसीलिए मैं हकीम का भेस धरकर तुम्हारी छावनी में गया था। मैंने अपने तावीज़ की ताकत से तुम्हारे राजा को ठीक कर दिया। तुम्हारी किस्मत अच्छी थी, इसलिए न सिर्फ तुम्हारा नौकर और तुम्हारा कुत्ता बल्कि तुम्हारा राजा भी और बाद में तुम भी मेरे तावीज़ के असर से ज़िन्दा बच गए।”

केनेथ यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। वह फटी-फटी आंखों से सिरकफ की ओर देखता रहा।

सिरकफ हंसकर बोला, “अब तुम आश्चर्य न करो, जल्दी से बिस्तर छोड़कर उठ बैठो। मुझे तुमसे एक गुप्त बात कहनी है। अगर तुम मेरी बात मान लो तो तुम मुझ पर और सुल्तान सालादीन पर बड़ा उपकार करोगे।”

केनेथ उठकर जल्दी से तैयार हो गया।

सिरकफ उससे कहने लगा, “देखो केनेथ, बात यह है कि धर्मयुद्ध के लिए आए हुए ईसाई राजा लोग अधिक दिनों तक युद्धभूमि में नहीं पड़े रहना चाहते। सब यहां से वापस जाना चाहते हैं। सिर्फ इंग्लैंड का राजा ही अपनी इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ है कि



जेरुसलम पर विजय पाए बिना वह वापस नहीं लौटेगा। सुल्तान खुद एक बहादुर आदमी है और वह बहादुरों की इज्जत करना जानता है। ईसाई राजाओं से सन्धि करने की इच्छा न होने पर भी वह रिचार्ड से दोस्ती करना चाहता है। इसीलिए ईसाई राजाओं ने रिचार्ड की बहिन के साथ सालादीन का विवाह करने का प्रस्ताव भेजा है। उन्होंने ऐनगाजी के पादरी के हाथ सन्धि का प्रस्ताव भेजा है। अगर रिचार्ड इसे मंजूर कर ले तो सुल्तान उसे एक संदेशा भेजना चाहता है। यही नहीं, वह रिचार्ड की बहिन राजकुमारी ऐडिथ के पास भी एक चिट्ठी भेजना चाहता है। अब तुम यह बताओ कि क्या तुम इन दोनों कागजों को राजा के पास ले जाओगे ?”

केनेथ थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर बोला, “भला सोचो तो सही, मैं अपना काला मुंह लेकर फिर से राजा की छावनी में कैसे जा सकता हूं ?”

लेकिन सिरकफ ने उसकी बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया। वहा बोला, “मैं तुम्हें वहां इसी तरह थोड़े ही भेजूंगा ! तुम्हें इस तरह भेस बदलकर वहां जाना होगा कि कोई पहचान ही न सके। तुम्हारा वफादार कुत्ता भी तुम्हारे साथ जाएगा। लेकिन उसे भी कोई पहचान नहीं सकेगा। वहां जाकर तुम्हें इस बात का मौका मिल सकता है कि तुम अपने खोए हुए सम्मान को फिर से प्राप्त कर सको। इंग्लैंड का झण्डा उखाड़ कर ले जानेवाले को तुम नहीं पहचानते, तुम्हारा कुत्ता उसे ज़रूर पहचानता है ! इसी आदमी ने कुत्ते को घायल किया था।”

केनेथ ने फौरन सिरकफ की बात मान ली। वह बोला, “तुमने एक बात मुझे याद दिला दी। मैं यह तो भूल ही गया था कि मेरा कुत्ता अपने दोस्त और दुश्मन को आसानी से पहचान सकता

है ! जिस आदमी ने उसे घायल किया होगा उसे तो सूंघकर ही वह पहचान लेगा। अच्छा, अब बताओ मुझे क्या करना है ?”

“सबसे पहले तो तुम्हें दो क्षण के लिए अपनी आंखें मूंदनी हैं। घबराओ मत, सर केनेथ, अपनी आंखें तो बन्द करो,” सिरकफ ने केनेथ से कहा। केनेथ ने अपनी आंखें बन्द कर लीं।

जब सिरकफ के कहने पर उसने अपनी आंखें खोलीं तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने आश्चर्य से देखा कि उसके सामने सुल्तान खड़ा है और धीरे-धीरे मुस्करा रहा है। सुल्तान बोला, “कहो केनेथ, तुम्हें कुछ ताज्जुब हो रहा है ? असल में मैं सुल्तान सालादीन ही हकीम और सिरकफ के रूप में तुमसे मिलता रहा हूं। मैं तुम्हारी बहादुरी का कायल हूं। अच्छा, अब तुम अपने काम के लिए तैयार हो जाओ।”

यह कहकर सुल्तान केनेथ के साथ महल के बाहर निकल आया।



8

सुल्तान की सहायता से केनेथ ने एक हब्शी का भेस बनाया। उसने अपने चेहरे का रंग भी बदल लिया। अब वह देखने में गोरा नहीं बल्कि सांयला मालूम होता था। हब्शी का भेस बनाकर वह राजा रिचार्ड की छावनी की ओर चल पड़ा।

जब वह ईसाई छावनी के पास पहुंचा तब तक शाम हो चुकी थी। छावनी के चारों तरफ शांति छाई हुई थी। लोग खाने-पीने की तैयारी में लगे हुए थे। इसी समय एक हब्शी ने रिचार्ड की छावनी में प्रवेश किया। उसके साथ ही उसका काला कुत्ता भी था, जो देखने में बड़ा डरावना मालूम होता था। चौकीदार ने उसे राजा के सामने पेश किया। उसने राजा को सलाम करके हाथ में सुल्तान की चिट्ठी रख दी।

चिट्ठी में सुल्तान ने लिखा था, “मुझे मालूम हुआ है कि आपका स्वास्थ्य अब ठीक हो गया है और आप मुझसे लड़ाई लड़ना चाहते हैं। यह सुनकर मुझे बड़ा अफसोस हुआ है। मुझे किसी बात का डर नहीं है। मेरे हज़ारों सिपाही मेरे इशारे पर हंसते-हंसते जान दे सकते हैं।

बात सिर्फ यही थी कि सुल्तान बेकार ही लोगों का खून नहीं बहाना चाहता था। उसने अपनी चिट्ठी में आगे लिखा था, “आपने जिस बौने गुलाम को मेरे पास तोहफे के रूप में भेजा

है, उससे मेरा खूब दिल-बहलाव होता है। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ!”

सुल्तान ने भी अपनी तरफ से एक गुलाम को तोहफे के रूप में भेजा था। वह यही हब्शी था। इसका नाम जोहाक बताया गया था और लिखा था कि यह आदमी बहुत ताकतवर है और साथ ही बुद्धिमान भी है। चिट्ठी के नीचे सुल्तान के दस्तखत और उसकी मुहर थी।

राजा रिचार्ड चिट्ठी पढ़ने के बाद कुछ देर तक उस हब्शी की ओर देखता रहा। फिर उसने उससे पूछा, “क्या तुम मुसलमान हो?”

इसके जवाब में हब्शी ने अपने गले में पहने हुए क्रॉस के पवित्र चिह्न को छूकर इशारे से बताया कि वह मुसलमान नहीं, ईसाई है।

राजा बोला, “खैर, तब तो ठीक है। मैं सुल्तान के तोहफे के रूप में तुमको अपने यहां रखने के लिए तैयार हूँ। मैं तुम्हें अपना खास अंगरक्षक बनाऊंगा। तुम्हें इसी खेमे में रहना होगा और मेरे हथियारों और कपड़े-लत्ते की देखभाल करनी होगी। समझे न?”

हब्शी गुलाम ने राजा को सलाम किया और फिर वह अपने काम में लग गया। वह राजा की ढाल लेकर खेमे के बाहर जा बैठा और उसे साफ करने लगा। राजा की ढाल किसी चमकीली धातु से बनी हुई थी। हब्शी ने उसे रगड़कर और भी चमका दिया। अब उसमें आसानी से किसी का चेहरा देखा जा सकता था।

इतने में अचानक उसने ढाल में देखा कि एक तुर्क सिपाही धीरे-धीरे राजा के तम्बू के पास आ रहा है। वह बहुत सतर्क हो गया और ढाल में पड़ती हुई उसकी परछाई को देखकर उसपर नज़र रखने लगा। तुर्क सिपाही किसी काम से राजा के पास आया

था। लेकिन इस समय उसकी चाल-ढाल से कुछ सन्देह हो रहा था। वह चारों तरफ बहुत चौकन्ना होकर देखता था और फिर राजा के खेमे की ओर बढ़ता जाता था। हब्शी को कुछ शक हो गया।

थोड़ी ही देर बाद हब्शी ने देखा कि वह तुर्क सैनिक धीरे-धीरे तम्बू के पास उस जगह जा पहुँचा जहाँ राजा अन्दर पीठ किए बैठा था। फिर अचानक पलक मारते ही उसने अपने कुर्ते में से एक चमकदार छुरा निकाल लिया और उछलकर राजा पर वार किया। बस पलक मारने की देरी थी कि राजा का अंत निश्चित था।

लेकिन इसी बीच एकाएक हब्शी गुलाम तीर की तेज़ी से उछला और उस तुर्क के पास जा पहुँचा। देखते-देखते उसने तुर्क सैनिक का हाथ मरोड़ दिया। अब दोनों में कुश्ती होने लगी। अपना हाथ छुड़ाने के लिए तुर्क ने पूरी कोशिश की लेकिन वह हब्शी की पकड़ को ढीला नहीं कर सका। थोड़ी देर तक राजा दोनों को लड़ते हुए देखता रहा। फिर अचानक उसने वह तिपाई उठा ली जिसपर यह बैठा हुआ था और उसे उसने तुर्क सिपाही के सिर पर दे मारा।

तिपाई बहुत वज़नी थी। उसके गिरते ही तुर्क सैनिक की खोपड़ी चकनाचूर हो गई और उसकी निर्जीव देह वहीं लुढ़क गई। राजा ने देखा कि इस कुश्ती में हब्शी के हाथ में चोट आ गई थी और खून टपक रहा था। राजा को शक हुआ कि कहीं दुश्मन के ज़हरीले छुरे का घाव तो इसे नहीं लग गया है। यह सोचते ही राजा बहुत घबराया। वह नहीं चाहता था कि उसका वफादार नौकर इस तरह अचानक मर जाए। इसलिए वह खुद उसका हाथ चूसकर खून बाहर फेंकने लगा।

लेकिन फिर अचानक राजा रुक गया। उसकी नज़र हब्शी

के हाथ में लगे हुए घाव पर ही जमी हुई थी। राजा को ऐसा लगा कि हब्शी की काली चमड़ी के नीचे गोरा रंग छिपा हुआ है। लेकिन हब्शी भी इस बात को ताड़ गया और फौरन मरहम-पट्टी कराने के बहाने वहाँ से अलग हट गया। राजा भी अपना मुँह धोने के लिए अन्दर चला गया।

उसी दिन शाम को राजा रिचार्ड नेविल नाम के अपने एक सेनापति के साथ इस प्रश्न पर विचार कर रहा था कि आखिर उस दिन अंग्रेज़ी झंडे को कौन चुरा ले गया। राजा ने बहुत निराश स्वर में कहा, “यह हमारे लिए सबसे बड़ी लज्जा की बात है कि आज तक चोर पकड़ में नहीं आया।” फिर अचानक राजा ने हब्शी की ओर देखकर कहा, “क्यों जोहाक, तुम उस चोर का पता लगा सकते हो? मैंने सुना है कि हब्शियों की बुद्धि बड़ी तेज़ होती है और वे गुप्त बातों का पता लगाने में बहुत होशियार होते हैं। बोलो, तुम करोगे इस काम को?”

जोहाक ने सिर हिलाकर हामी भरी। उसने बताया कि वह बहुत आसानी से चोर का पता लगा सकता है। उसने कहा, “अगर छावनी के सभी राजाओं और सेनापतियों को किसी दिन एक जगह इकट्ठा किया जाए और मुझे अपने कुत्ते के साथ वहाँ मौजूद रहने की इजाज़त दे दी जाए तो मैं आसानी से चोर का पता लगा सकता हूँ।”

राजा ने खुश होकर कहा, “ठीक है, इसका इन्तज़ाम हो जाएगा। इसमें मुश्किल ही क्या है। झंडा चोरी चला गया है। उसकी जगह कल सेण्ट जार्ज की पहाड़ी पर एक दूसरा झंडा फहराया जाएगा। उस समय पूरी ईसाई छावनी के सभी राजा और सेनापति वहाँ मौजूद रहेंगे और नये झंडे को सलामी देंगे। उस समय तुम भी मेरे अंगरक्षक के रूप में वहाँ मौजूद रह सकते हो।”

~~~~~





9

दूसरे दिन जार्ज की पहाड़ी के सामने पूरी ईसाई फौज इकट्ठी हुई। सभी राजा और सेनापति राजा रिचार्ड के सामने कतार बांधकर खड़े हुए। पहाड़ी की चोटी पर इंग्लैंड का झंडा फहराया गया।

इसके बाद नये झंडे को सलामी देने के लिए सैनिकों की एक-के-बाद एक टुकड़ी अपने राजा और सेनापति के साथ सलाम करते हुए राजा रिचार्ड के आगे से गुजरने लगी।

पहले फ्रांस का राजा सलामी देते हुए गुजरा। उसके बाद आस्ट्रिया का ड्यूक आया। सबसे बाद में मोन्सेराट का ज़मींदार मार्क्विस् कोनरेड आया। वह अपने सफेद घोड़े पर सवार था और बड़ी शानदार पोशाक पहने था और खूब अकड़कर चल रहा था।

जब मार्क्विस् कोनरेड सलाम करते हुए राजा के सामने से गुजरा तो राजा ने मुस्कराकर उसका स्वागत किया। लेकिन इसी बीच अचानक एक घटना घट गई। न मालूम कहां से एक काला भयानक-सा कुत्ता तेज़ी से दौड़ता हुआ आया और मार्क्विस् पर टूट पड़ा। कुत्ता उछलकर घोड़े पर चढ़ गया और अपने पैने दांतों से मार्क्विस् की गर्दन पकड़ने की कोशिश करने लगा।

मार्क्विस् अचानक हुए इस हमले के लिए तैयार नहीं था। वह घोड़े से लुढ़ककर ज़मीन पर आ गिरा और चीखने-चिल्लाने लगा। उसने कुत्ते को दो-तीन घूसे भी जमाए; लेकिन कुत्ता उससे

अलग होने के वजाय और लिपट गया। मार्क्विस् का घोड़ा इसी बीच भड़ककर वहां से भाग निकला। यह कुत्ता रिचार्ड के अंगरक्षक हब्शी जोहाक का था।

राजा रिचार्ड पहले तो चौंका, लेकिन फिर समझ गया। उसने जोहाक की ओर घूमकर कहा, “तुम्हारे कुत्ते ने असली आदमी को पकड़ लिया है, इसमें कोई शक नहीं है। तुम अब कुत्ते को जल्दी ही अपने पास बुला लो, वरना वह मार्क्विस् को फाड़ खाएगा !”

राजा का हुक्म पाकर जोहाक ने बड़ी मुश्किल से कुत्ते को काबू में किया। कुत्ता अब भी मार्क्विस् पर ज़ोर-ज़ोर से भूंक रहा था। यह सब देखकर मार्क्विस् के सिपाही गुस्से से आग-बबूला हो उठे और जोहाक और उसके कुत्ते को मारने के लिए दौड़ पड़े।

लेकिन इसी बीच राजा रिचार्ड ने गरजकर कहा, “खबरदार ! कोई आगे न बढ़ना ! इस वफादार कुत्ते ने अपना फर्ज पूरा किया है। मार्क्विस्, आज तुम पकड़े गए। खड़े रहो, कायर कहीं के ! तुमने मेरे साथ विश्वासघात किया !”

मार्क्विस् की हालत खराब थी। वह मारे शर्म और गुस्से से कांप रहा था। वह अपने साथियों को बदले के लिए ललकारने लगा। फ्रांस और स्पेन के राजाओं और उनके सिपाहियों ने भी मार्क्विस् के इस अपमान का विरोध करना शुरू किया।

लेकिन तभी राजा रिचार्ड ने गरजकर कहा, “इस तरह शोर करने की ज़रूरत नहीं है ! इस कुत्ते ने बता दिया है कि मार्क्विस् ने झंडा चुराया था। मैं मार्क्विस् पर इंग्लैंड का झंडा चुराने का आरोप लगाता हूं !”

इसके बाद राजा की आज्ञा से सब लोग अपनी-अपनी छावनी



में लौट गए। मार्क्विस् बराबर इंकार करता रहा और कहता रहा कि मैंने झंडा छुआ तक नहीं था। उसके साथ के दूसरे राजा लोग भी उसकी तरफदारी करते रहे। लेकिन काफी बहस के बाद यह तय हुआ कि कुत्ते ने सही आदमी को पकड़ा है। कुत्ते में यह एक प्राकृतिक गुण होता है कि वह जिस चीज़ को एक बार सूंघ लेता है, उसकी गंध कभी भूल नहीं पाता। सैकड़ों घटनाएं इस तरह की हुई हैं, जिनमें कुत्ते की सहायता से असली अपराधी का पता चला है।

राजा रिचार्ड ने कहा, “मार्क्विस् को मेरे साथ द्वन्द्वयुद्ध करना पड़ेगा !”

लेकिन मार्क्विस् रिचार्ड जैसे योद्धा के साथ लड़ने के लिए तैयार नहीं था। इसके अलावा रिचार्ड के साथी भी यह नहीं चाहते थे कि उनका सरदार और धर्मयुद्ध का नेता अकेला किसी से लड़े और अपनी जिन्दगी को खतरे में डाले। अन्त में तय हुआ कि रिचार्ड ही अपनी तरफ से किसी ऐसे आदमी को चुन ले जो मार्क्विस् के साथ लड़ने को तैयार हो।

इसके अलावा राजाओं की यह राय थी कि यह द्वन्द्वयुद्ध ईसाई छावनी में न हो, क्योंकि इससे सिपाहियों के भड़क उठने का डर था। यह तय हुआ कि सुल्तान सालादीन को एक पत्र लिखकर द्वन्द्वयुद्ध के लिए कोई उचित जगह तय करने को कहा जाए।

जब वह पत्र लेकर राजा का हथ्थी नौकर जोहाक सुल्तान के पास जाने लगा तो राजा ने उससे कहा, “देखो जोहाक, सुल्तान के दरबार में केनेथ नाम का एक अंग्रेज़ सरदार तुम्हें मिलेगा। उससे तुम मेरा यह सन्देश कह देना कि अगर वह मेरी जगह मार्क्विस्

के साथ दंगल में लड़ना चाहता हो तो तुरन्त यहां आ पहुंचे।”

हथ्थी यह सुनकर मन-ही-मन बड़ा प्रसन्न हुआ। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, यह हथ्थी और कोई नहीं सर केनेथ ही था। केनेथ के लिए इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती थी कि उसे अपने दुश्मन से सबके सामने अखाड़े में लड़ने का मौका मिल जाए !

\*\*\*\*\*

चमत्कारी तावीज़ : 55

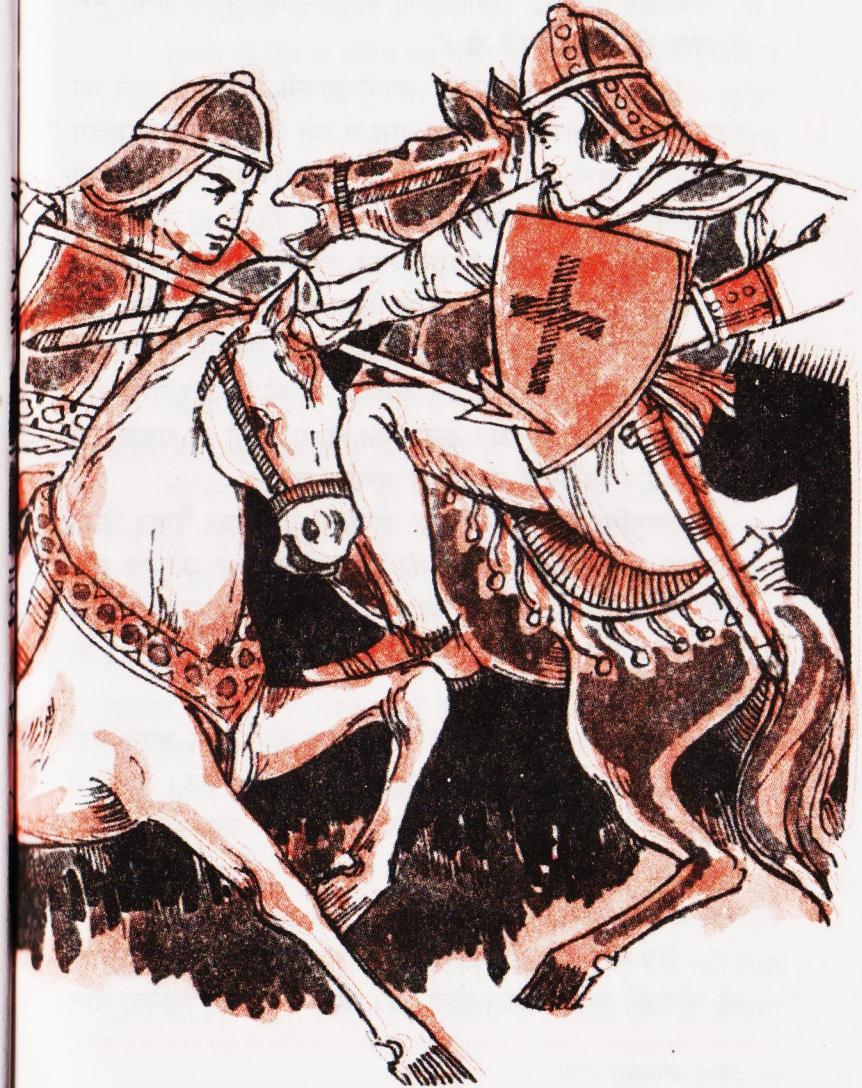




राजा का पत्र मिलने पर सुल्तान ने दंगल की जगह तय कर दी। यह जगह ईसाई और मुसलमान छावनियों के बिलकुल बीच में पड़ती थी। सुल्तान के ईसाई दरबारी केनेथ ने भी राजा रिचार्ड की बात मान ली और उसकी जगह द्वन्द्वयुद्ध में भाग लेना स्वीकार कर लिया।

द्वन्द्वयुद्ध का निश्चित दिन आ पहुंचा। दंगल के मैदान में सुल्तान सालादीन मेहमानों के स्वागत के लिए अपने पांच सौ अरब सिपाहियों को साथ लेकर पहले से वहां डटा हुआ था। कुछ समय बाद राजा रिचार्ड और मार्क्विस कोनरेड भी अपने साथ दो-दो सौ सिपाहियों को लेकर वहां पहुंच गए। सर केनेथ भी अपने घोड़े पर सवार होकर वहां मौजूद था।

दंगल शुरू होने से पहले खुद सुल्तान ने राजा रिचार्ड का स्वागत किया और अपने खेमे में ले जाकर उसे एक अच्छे सिंहासन पर बिठाया। फिर राजा की बड़ी-सी तलवार को देखकर वह बोला, “इतनी भारी तलवार को आपके जैसे योद्धा के अलावा और कौन उठा सकता है ! अच्छा सुनिए, मैंने केनेथ को एक घोड़ा और ज़रूरी हथियार दे दिए हैं। उसने आपके हुक्म के मुताबिक मार्क्विस के साथ लड़ना कबूल कर लिया है। मैं कई बार भेस बदलकर उससे अनजाने में मिला हूं और उसकी ताकत परख चुका हूं। सचमुच





वह बहुत बहादुर आदमी है।”

रिचार्ड ने पूछा, “क्या उसको मालूम है कि अलग-अलग भेस में आप ही उससे मिले थे !”

“हां, जब आपने उसको अपनी छावनी से निकल जाने का हुक्म दिया था और मैं हकीम के भेस में उसे अपने साथ ज़रूसलम ले गया था, तभी मैंने उसे अपना असली परिचय दिया था। मुझे पहचानने के बाद ही उसने मेरी मदद कबूल की थी।” उसके बाद सुल्तान दूसरे सरदारों का स्वागत करने के लिए बाहर चला आया।

कुछ समय बाद एक बड़े-से मैदान में दंगल की तैयारी हुई, तुरही और नगाड़े बजने लगे और दोनों योद्धा रणभूमि में आ खड़े हुए। दोनों सिर से पैर तक ज़िरहबख्तर से लदे थे और तरह-तरह के हथियार लिए हुए थे। केनेथ का चेहरा खुशी से चमक रहा था। लेकिन मार्क्विंस का चेहरा गम्भीर था।

रणभूमि से थोड़ी दूर एक छोटा-सा गिरजाघर तैयार किया गया था और उसमें देवी मेरी की मूर्ति की स्थापना की गई थी। दोनों योद्धा गिरजे तक गए। वहां उन्होंने शपथ ली, “यह द्वन्द्वयुद्ध न्याय और धर्म के लिए हो रहा है। जो पक्ष अपराधी होगा, उसे भगवान उचित दण्ड देंगे !”

इसके बाद दोनों रणभूमि में लौट आए और अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो गए। तुरन्त युद्ध के बाजे बज उठे। दोनों ने अपने-अपने घोड़े को ऐड़ मारी और एक-दूसरे की ओर लपके। थोड़ी ही देर में दोनों आपस में भिड़ गए और एक-दूसरे पर कस-कसकर वार करने लगे।

जब भी किसी की तलवार या भाला दूसरे की ढाल पर लगता तो ज़ोर की एक आवाज़ होती थी। चारों तरफ खड़े सैनिक सांस

रोककर इस दृश्य को देखने लगे। इतने में अचानक केनेथ की ढाल से टकराकर मार्क्विंस के भाले का अगला हिस्सा टूट गया।

धक्के के ज़ोर से केनेथ का घोड़ा कुछ लड़खड़ा गया। लेकिन केनेथ ने उसे संभाल लिया और बिजली की तेज़ी से आगे बढ़कर उसने मार्क्विंस के ऊपर अपने भाले से वार किया। मार्क्विंस इस वार को संभाल नहीं सका। उसकी तलवार चूरचूर हो गई। दूसरे ही वार में उसका बख्तर टूट गया और केनेथ का भाला उसकी छाती में घुस गया। वह घोड़े से नीचे आ गिरा। देखते-देखते केनेथ अपनी तलवार खींचकर उसकी छाती पर चढ़ गया और गरजकर बोला, “कहो, अब तुम अपने पाप को कबूल करते हो या नहीं ?”

मार्क्विंस कांपते हुए स्वर में बोला, “हां, धर्म की विजय हुई। अपने पाप के कारण मैं हार गया !”

मार्क्विंस को ज़मीन पर पड़ा देखकर कई राजा और सेनापति वहां आ पहुंचे। राजा रिचार्ड वैसे तो बहुत क्रोधी स्वभाव का था, लेकिन उसका हृदय बड़ा उदार था। उसने सुल्तान की ओर घूमकर कहा, “सुल्तान, इस बेचारे ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। अब इसको मारने की क्या ज़रूरत है, इसको छोड़ दिया जाए। सुल्तान, अब आप अपना जादू का तावीज़ निकालकर इस बेचारे को चंगा कर दीजिए !”

पहले तो सुल्तान सालादीन इनकार करता रहा लेकिन बाद में वह राजी हो गया। उसने अपने सेवकों को हुक्म दिया, “घायल मार्क्विंस को मेरे खेमे में पहुंचा दिया जाए !”

लेकिन इसी बीच ग्रांड मास्टर आगे बढ़कर बोला, “मैं और आस्ट्रिया के ड्यूक लियोपोल्ड मार्क्विंस के पक्ष में हैं। उसकी सेवा करने की ज़िम्मेदारी हमारी है। इसलिए उसे उसके खेमे के अलावा



और कहीं हम नहीं ले जाने देंगे। अगर सुल्तान की इच्छा हो तो वे वहां आकर मार्क्विस् का इलाज कर सकते हैं !”

यह सुनकर सुल्तान को कुछ गुस्सा तो आया, लेकिन वह राजा रिचार्ड को वचन दे चुका था, इसलिए कुछ बोला नहीं। वह मार्क्विस् के खेमे में जाने के लिए तैयार हो गया। जाते समय उसने सारे राजाओं को एक घंटे बाद अपनी छावनी में दावत पर आने का न्यौता दिया।



11

इसके बाद राजा रिचार्ड केनेथ को साथ लेकर अपने खेमे में लौट आया। अब केनेथ का मान बहुत बढ़ गया था। खेमे में जाते ही राजा की बहिन ऐडिथ ने केनेथ के ज़िरह-बख्तर उतारने में मदद दी।

कुछ देर बाद राजा रिचार्ड ने अपने सभी सैनिकों और सेनापतियों को इकट्ठा करके कहा, “क्या तुममें से किसी को यह मालूम है कि आज सर केनेथ के रूप में जिस वीर ने हमारे धर्मयुद्ध में भाग लिया है, वह कौन है ? कुछ दिन पहले मुझे भी कुछ नहीं मालूम था। लेकिन उसके नौकर के मुंह से सबसे पहले डिवोकस को यह बात मालूम हुई। इसके बाद ऐनगाजी के पादरी से मुझे यह बात मालूम हुई। आप लोग जानते हैं, इसका असली नाम क्या है ? इसका नाम है डेविड, जो स्काटलैंड के राजा विलियम का भतीजा है और स्काटलैंड की गद्दी का असली वारिस है !”

राजा की यह बात सुनकर सब लोग आश्चर्य में पड़ गए। राजा ने आगे कहा, “राजा विलियम ने धर्मयुद्ध में इसके साथ एक फौज भेजने को कहा था। लेकिन ऐन मौके पर उसके राज्य में बलवा हो गया और वह सेना को नहीं भेज सका। पर डेविड ने अपने चाचा के वचन को निभाया। वह खुद अकेला भेस बदलकर और अपना नाम सर केनेथ रखकर हमारी फौज में शामिल हुआ। हम लोगों में से कोई उसे पहचान नहीं सका। आह ! अगर उस



दिन मैं इंग्लैंड के राष्ट्रीय झंडे की चोरी के अपराध में इसकी हत्या करवा देता तो मेरे हाथों कितना बड़ा पाप होता ! मैं सारी ज़िन्दगी इस पाप को नहीं धो सकता था !”

इसके बाद वहीं राजा ने सबके सामने अपनी बहिन ऐडिथ के साथ डेविड का विवाह करने के निश्चय की घोषणा कर दी। सैनिकों और सेनापतियों ने राजा की इस घोषणा का स्वागत किया और बड़ी खुशी मनाई। अब सब लोग केनेथ को डेविड के नाम से पुकारने लगे।

एक घंटे-भर बाद राजा रिचार्ड डेविड को अपने साथ लेकर सुल्तान की छावनी की ओर रवाना हुआ। वहां लगभग सभी राजा इकट्ठे हो चुके थे। सिर्फ मोन्सेराट का ज़मींदार मार्क्विस् कोनरेड गैरहाज़िर था। वह घायल अवस्था में अपने खेमे में पड़ा था। सुल्तान के जादुई तावीज़ के ज़ोर से वह मरने से तो बच गया था, लेकिन अभी बिस्तर से नहीं उठ सकता था।

सुल्तान की तरफ से सबसे पहले ठंडे शरबत का इन्तज़ाम किया गया था। सब लोग शरबत पीने लगे।

वहां राजाओं के साथ ग्रांड मास्टर भी बैठा था। उसने जैसे ही शरबत का प्याला अपने होंठों से लगाना चाहा कि इतने में न जाने कहां से वह नाटा नेक्टावेनस दौड़ता हुआ वहां आ पहुंचा और ग्रांड मास्टर की ओर देखते ही बोला, “हमेशा के लिए शांति से सो जाओ !”

इन शब्दों को सुनकर ग्रांड मास्टर चौंक पड़ा। लेकिन उसने अपनी घबराहट छिपाने के लिए शरबत का प्याला अपने होंठों से लगा लिया। परन्तु वह शरबत पी नहीं सका। अचानक सुल्तान सालादीन ने अपनी तलवार खींच ली और देखते-देखते ग्रांड मास्टर का सिर धड़ से अलग कर दिया।

\*\*\*\*\*

राजा रिचार्ड को छोड़कर बाकी सब दूसरे राजा इस घटना से भड़क उठे और अपनी-अपनी तलवारें खींचकर बोले, “विश्वासघात ! यह तो हमारे साथ धोखा किया गया !”

लेकिन सुल्तान फिर से चुपचाप अपनी जगह पर जा बैठा, जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसने अपने गुलामों को ग्रांड मास्टर की लाश को वहां से हटा ले जाने का हुक्म दिया। फिर उसने सब लोगों को बताया कि उसने ग्रांड मास्टर को क्यों मारा।

बात यह थी कि कुछ देर पहले मार्क्विस् को अपने खेमे में अकेले बिस्तर पर पड़ा देखकर ग्रांड मास्टर ने अपने हाथ से उसकी हत्या कर दी थी, मार्क्विस् सुल्तान के तावीज़ के ज़ोर से बच गया था, लेकिन ग्रांड मास्टर को डर था कि कहीं यह ठीक होकर सारा भेद न खोल दे।

उसने मार्क्विस् की हत्या करते समय यही शब्द कहे थे, “हमेशा के लिए शांति से सो जाओ !” लेकिन संयोग से उस समय बीना नेक्टावेनस खेमे के पास से गुज़र रहा था। कुछ आवाज़ सुनकर वह वहीं ठहर गया और उसने ग्रांड मास्टर को हत्या करते हुए देख लिया। फिर उसने तुरन्त जाकर सालादीन को सारी बात बता दी थी।

अंत में सुल्तान ने वहां मौजूद राजाओं की ओर घूमकर कहा, “आप लोगों ने देखा ना कि बीने के मुंह से उसी बात को सुनकर ग्रांड मास्टर किस तरह चौंक पड़ा था और घबरा गया था ! इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि घायल मार्क्विस् की उसी ने हत्या की थी। अगर मैं ज़रा-सा चूक जाता और वह मेरा दिया हुआ शरबत पी लेता तो फिर मैं उसको कोई सज़ा नहीं दे सकता था, क्योंकि हमारे यहां अरब में यह रिवाज़ है कि अगर कोई हमारी मेहमानदारी कबूल कर लेता है तो फिर हम उसके खिलाफ हाथ नहीं उठाते हैं !”

\*\*\*\*\*





12

दूसरे दिन सुल्तान सालादीन ने राजा रिचार्ड को अपने यहां से विदा किया। वह बोला, “राजा रिचार्ड, मैं आपकी बहादुरी की तारीफ करता हूं। एक वक्त मुझे उम्मीद थी कि आपके साथ रिश्तेदारी कायम करके मैं अपने को धन्य समझूंगा। लेकिन अब आपकी बहिन ने जिसके गले में वरमाला डाली है वह बहुत बड़ा योद्धा है और साथ ही बड़ा दयालु आदमी है। मैं इन दोनों के सुख की कामना करता हूं !”

कुछ देर रुककर सुल्तान ने आगे कहा, “अगर मैं जेरूसलम को आपको सौंप सकता, तो जरूर सौंप देता लेकिन यह संभव नहीं है। जिस तरह यह ईसाइयों का तीर्थस्थान है, उसी तरह मुसलमानों का भी है। लेकिन यहां के सुल्तान के रूप में मैं यह वायदा करता हूं कि यहां आनेवाले ईसाई यात्रियों को कभी तंग नहीं किया जाएगा और उन्हें कोई दिक्कत नहीं होगी। अच्छा, अलविदा ! आमीन !”

इंग्लैंड लौटकर राजा ने डेविड के साथ अपनी बहिन एडिथ का विवाह बड़ी धूमधाम के साथ किया। दूर-दूर के राजाओं ने वर-वधू को तरह-तरह के उपहार भेजे। जेरूसलम के सुल्तान सालादीन ने भी अपनी तरफ से वह चमत्कारी तावीज़ और अनेक उपहार भेजे।

इस प्रकार जेरूसलम के सुल्तान सालादीन और यूरोप के राजाओं के बीच का धर्मयुद्ध खत्म हुआ।

• • •



# किशोरों के लिए उपन्यास

- गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)  
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)  
खज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)  
चांदी का बटन (Kidnapped)  
कटपुतला (Pinocchio) (पुरस्कृत)  
वीर सिपाही (Ivanhoe)  
चमत्कारी ताबीज़ (Talisman)  
तीसमार खां (Don Quixote)  
तीन तिलंगे (Three Musketeers)  
क्रैदी की करामात (Count of Monte Christo)  
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)  
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)  
रॉबिनहुड (Robinhood)  
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)  
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)  
जादूनगरी (Alice in Wonderland)  
मूंगे का दीप (Coral Island)  
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)  
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)  
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)  
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)  
मोबी डिक (Moby Dick)  
जंगल की कहानी (Call of the Wild)  
काला घोड़ा (Black Beauty)  
अद्भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)  
काला फूल (Black Tulip)  
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Sea)

शिक्षा



भारती

 Nanhi Shop

